गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका सितम्बर-2020

पितृपक्ष विशेष

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR
For Premium User

गुरुत्व ज्योतिष

मासिक ई-पत्रिका

सितम्बर-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

अनुक्रम

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

हिन्दू संस्कृति में माता-पिता ही देव माना जाता है।

इस लिये शास्त्रों में कहां गया हैं।

मातृदेवो भव पितृ देवो भवः

अर्थातः माता-पिता ही साक्षात देवता (भगवान) हैं।

इस लिए माता-पिता की सेवा करने से विद्या, यश, बल और आयु की प्राप्ति होती है।

माता-पिता की मृत्यु के बाद में उनकी जीवात्मा के सद्गति एवं कल्याण के लिए श्राद्धकर्म का विधान बताया गया हैं।

मृत्यु के बाद जीवात्मा को अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुरुप सुख-दुःख एवं स्वर्ग एवं नरक को प्राप्त करती है। इस लिए संतान का यह कर्तव्य है, कि वह अपने माता-पिता तथा स्वजनों की मृत्यु के बाद में उनहें परलोक में कल्याण अथवा एवं अन्य प्राणि की योनि में भी कल्याण तथा सुख की प्राप्ति के निमित्त श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त कर्म करना चाहिए। इस लिए हिन्दू धर्म में पितृऋण से मुक्ति के लिए श्राद्ध कर्म अथवा पितृकर्म किया जाता है।

शास्त्रों में उल्लेखित हैं की नाम तथा गोत्र के माध्यम से विश्वेदेव तथा अग्निदेव इत्यादि पितरों के निमित्त दीगई हव्यको पितरों तक पहुंचा देते हैं।

यदि पितर देव योनि को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड अमृत रूपमें प्राप्त हो जाता है तथा यदि मनुष्य योनि को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड अन्न के रूपमें प्राप्त हो जाता है तथा यदि पितर अन्य प्राणियों की योनि को को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड उस प्राणि के भोजन के अनुरुप प्राप्त हो जाता है और जीव को तृप्त करती है। जानकारों का मत हैं की श्राद्ध के प्रभाव से उस दिन पितर गण जिस रुप में भी हो उनके निमित्त किया गया पिण्ड दान पितरों को रुपांतरित होकर किसी ना किसी रुप से कोई ना कोई लाभ अवश्य करता है।

श्राद्ध करमे के निमित्त विशेष मन्त्रों के द्वारा जब उन्हें बुलाया जाता हैं, तब पितर मनकी गतिकी तरह स्मरण मात्रसे ही श्राद्ध के स्थान पर उपस्थित हो जाते हैं और आमंत्रित किये गये ब्राह्मणों के माध्यम से भोजन ग्रहण कर तृप्त हो जाते हैं।

शास्त्रों में श्राद्ध कर्म के लिए यदि पर्याप्त धन न हो तो श्राद्ध कर्म किस प्रकार करना चाहिए इस का वर्ण भी किया गया है।

कोई संपन्न हो या गरीब अपने सामर्थ्य के अनुसार श्राद्धकर्म सभी वर्ग के व्यक्ति को यथा संभव साधनोंसे पूर्ण श्रद्धाभाव से श्राद्धकर्म अवश्य करना चाहिये।

यदि पुत्र न हो तो श्राद्ध करने का धिकार मुख्य रुप से पुत्र को बताया गया हैं लेकिन यदि पुत्र संतान न हो तो यह के अलावा पौत्र, प्रपौत्र, दौहित्र (पुत्रीका पुत्र अर्थात नाती), पत्नी, भाई, भतीजा, पिता, माता, पुत्रवधू, बहन, भानजा, सपिण्ड (अर्थात मृतक से लेकर पूर्व की सात पीढ़ी तक का परिवार) तथा सोदकर (अर्थात आठवीं पीढ़ी से लेकर चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों का परिवार) को होता हैं।

शास्त्रों में विभिन्न मत में श्राद्ध करने का अधिकार मुख्य रुप से पुत्र को ही दिया गया हैं तथा पुत्र के अभाव में श्राद्ध कर्म चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों का परिवार कर सकता हैं। यदि सगे-संबंधि न हो तो मित्रों अथवा मृतक के धनसे राजा (सरकारी अधिकारी) उसके सभी कर्म करवा सकते है।

दान के विषय में विद्वानों का कथन हैं पितरों के निमित्त किया गया दान पितर तक पहुच जाता है। यदि जीवात्मा की मुक्ति हो गई हो तो भी दिये गये श्राद्ध कर्म एवं दान का पूण्य लाभ पुनः आपको ही विशेष लाभ देगा।

यदि एक सामान्य उदाहरण से समझे तो यदि हमें अपने बैंक खाते से किसी अन्य बैंक खाते में पैसे स्थानांतरण (Transfer) करने हो तो खाता धारक का नाम और नंबर तथा जिस शाखा में खाता हो उस शाखा विशेष शाखा क्रमांक सहि हो तो ही पैसे खाते में जमा होते हैं अन्यथा पैसे भेजने वाले के खाते में वापस आजाते हैं।

उसी प्रकार यदि हमें किसी को सीधे डाक से नकद पैसे भेजने हो तो वह केवल उसी व्यक्ति या अधिकृत व्यक्ति को ही दिये जाते हैं, यदि किसी कारण से प्राप्त कर्ता व्यक्ति या अधिकृत व्यक्ति उपलब्ध न हो या पता बदल गया हो तो भेजा गया पैसा डाक के माध्य में वापस मिल जाता है। जब भेजा गया पैसा गलत खाते या पते पर जाकर व्यर्थ नहीं होता वह पुनः वापस आ जाता हैं। तो विधि-पूर्वक किया गया श्राद्ध कर्म कैसे व्यर्थ जा सकता है !

देवलोक तथा पितृलोक में निवास कर्ता का आयुष्य काल मनुष्य के आयुष्य काल से कई गुना ज्यादा होता है। इसी लिए हमारे एक मास के बराबर पितरों का केवल एक अहोरात्र (अर्थात दिन-रात) होता है। इस लिए अपने पितरों को देवलोक अथवा पितृलोक में मानकर श्राद्ध कर्म अवश्य करना चाहिए।

विभिन्न शास्त्रों-धर्मग्रंथों में वर्णित श्राद्ध कर्म की पद्धतियों के वर्णन में भिन्नता संभव हैं तथा विभिन्न प्रदेशों एवं लोक परम्पराओं में अंतर से भी इस में भिन्नता संभव हैं।

हमारा प्रयास रहा हैं की विभिन्न शास्त्रों-धर्मग्रंथों एवं विद्वानों से प्राप्त जानकारी के आधार पर पाठकों के मार्गदर्श हेतु सर्वाधिक प्रचलित श्राद्ध कर्म एवं जानकारीयों को समाहित करने का प्रयास किया हैं।

यदि जानकारीयों के वर्णन में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ!

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं ..

आप अपने जीवन में दिन प्रतिदिन अपने उद्देश्य कि पूर्ति हेतु अग्रणिय होते रहे आपकी सकल मनोकामनाएं पूर्ण हो एवं आपके सभी शुभ कार्य परमात्मा के आशिर्वाद से पूर्ण होते रहे हमारी यहि मंगल कामना हैं......

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

सितम्बर 2020 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	09:42	धनिष्ठा	16:37	अतिगंड	13:00	वणिज	09:42	कुंभ	-
2	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	10:51	शतभिषा	18:33	सुकर्मा	13:03	बव	10:51	कुंभ	-
3	गुरु	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	12:23	पूर्वाभाद्रपद	20:50	धृति	13:22	कौलव	12:23	कुंभ	18:29
4	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	14:15	उत्तराभाद्रपद	23:27	शूल	13:58	गर	14:15	मीन	-
5	शनि	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	16:27	रेवति	26:20	गंड	14:48	विष्टि	16:27	मीन	19:36
6	रवि	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	18:52	अश्विनी	29:23	वृद्धि	15:48	बालव	18:52	मेष	-
7	सोम	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	21:21	भरणी	-	ध्रुव	16:50	कौलव	08:06	मेष	-
8	मंगल	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	23:44	भरणी	08:25	व्याघात	17:48	गर	10:34	मेष	21:21
9	बुध	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	25:46	कृतिका	11:15	हर्षण	18:32	विष्टि	12:48	वृष	-
10	गुरु	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	27:16	रोहिणि	13:38	वज्र	18:51	बालव	14:36	वृष	22:47
11	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	नवमी	28:2	मृगशिरा	15:24	सिद्धि	18:38	तैतिल	15:45	मिथुन	-
12	शनि	आश्विन	कृष्ण	दशमी	27:59	आद्रा	16:24	व्यतिपात	17:47	वणिज	16:07	मिथुन	-
13	रवि	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	27:04	पुनर्वसु	16:33	वरियान	16:14	बव	15:38	मिथुन	00:33
14	सोम	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	25:20	पुष्य	15:52	परिघ	14:00	कौलव	14:18	कर्क	-

15	मंगल	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी	22:54	आश्लेषा	14:25	शिव	11:08	गर	12:12	कर्क	02:34
16	बुध	आश्विन	कृष्ण	चतुर्दशी	19:53	मघा	12:20	सिद्धि	07:44	विष्टि	09:27	सिंह	-
17	गुरु	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	16:29	पूर्वाफाल्गुनी	09:48	शुभ	23:50	चतुष्पाद	06:14	सिंह	04:41
18	शुक्र	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	प्रतिपदा	12:53	उत्तराफाल्गुनी	06:59	शुक्ल	19:38	बव	12:53	कन्या	-
19	शनि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	द्वितीया-तृतीया	09:15 -29:47	चित्रा	25:20	ब्रह्म	15:28	कौलव	09:15	कन्या	06:47
20	रवि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	चतुर्थी	26:37	स्वाती	22:51	इन्द्र	11:29	वणिज	16:09	तुला	-
21	सोम	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	पंचमी	23:55	विशाखा	20:48	वैधृति	07:48	बव	13:12	तुला	08:54
22	मंगल	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	षष्ठी	21:45	अनुराधा	19:18	प्रीति	25:42	कौलव	10:46	वृश्चिक	-
23	बुध	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	सप्तमी -	20:13	जेष्ठा	18:24	आयुष्मान	23:25	गर	08:54	वृश्चिक	11:00
24	गुरु	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	अष्टमी	19:18	मूल	18:09	सौभाग्य	21:38	विष्टि	07:41	धनु	-
25	शुक्र	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	नवमी	19:00	पूर्वाषाढ़	18:30	शोभन	20:22	बालव	07:04	धनु	12:57
26	शनि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	दशमी	19:15	उत्तराषाढ़	19:25	अतिगंड	19:33	तैतिल	07:04	मकर	-
27	रवि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	एकादशी	20:00	श्रवण	20:49	सुकर्मा	19:08	वणिज	07:34	मकर	-
28	सोम	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	द्वादशी	21:10	धनिष्ठा	22:38	धृति	19:04	बव	08:32	मकर	15:17
29	मंगल	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	त्रयोदशी	22:41	शतभिषा	24:47	शूल	19:16	कौलव	09:53	कुंभ	-
30	बुध	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	चतुर्दशी	24:30	पूर्वाभाद्रपद	27:14	गंड	19:44	गर	11:33	कुंभ	16:29

सितम्बर 2020 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	09:42	अनन्त चतुर्दशी, 10 दिन का श्रीगणेशोत्सव पूर्ण, पार्थिव गणेश प्रतिमा विसर्जन (महाराष्ट्र), इन्द्र गोविन्द पूजा (ओड़ीसा), व्रत की पूर्णिमा, महालय आरंभ,पूर्णिमा का श्राद्ध (09:42 बजे पश्चयात), श्रीसत्यनारायण पूजा कथा, क्षमावाणी पर्व (दिगंबर जैन),
2	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	10:51	स्नान-दान हेतु उत्तम भाद्रपदी पूर्णिमा (10:51 बजे पूर्व), शिव परिवर्तनोत्सव, लोकपाल पूजा पूर्णिमा, संन्यासियोंका चातुर्मास पूर्ण (शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रतधारी के लिए आश्विन में दूध वर्जित हैं।), श्रीमद्भागवत सप्ताह पूर्ण, गोत्रिरात्र व्रत पूर्ण, पितृपक्ष का तर्पण प्रारंभ, प्रतिपदा का श्राद्ध 10:51 बजे पश्चयात,
3	गुरु	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	12:23	आश्विन कृष्ण आरंभ, अशून्य शयन व्रत, द्वितीया का श्राद्ध, दूज का श्राद्ध 12:23 बजे पश्चयात,दूज का श्राद्ध,
4	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	14:15	द्वितीया का श्राद्ध, दूज का श्राद्ध 14:15 बजे पूर्व,
5	शनि	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	16:27	तृतीया श्राद्ध, तीज का श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (चं.उ.रा.7:37)
6	रवि	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	18:52	चतुर्थी का श्राद्ध, चौथ का श्राद्ध, कृत्तिका श्राद्ध
7	सोम	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	21:21	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, चंद्र षष्ठी व्रत,
8	मंगल	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	23:44	षष्ठी का श्राद्ध, छठ का श्राद्ध, कपिला षष्ठी,
9	बुध	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	25:46	सप्तमी का श्राद्ध, सातम का श्राद्ध, भानु सप्तमी पर्व (विद्वानों के मत से सूर्य ग्रहण तुल्य फलप्रद),
10	गुरु	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	27:16	अष्टमी का श्राद्ध, आठम का श्राद्ध, कालाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी अष्टमी,महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, गयामध्याष्टमी, जीवित्पुत्रिका व्रत, जीउतिया व्रत, गजगौरी अष्टमी,
11	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	नवमी	28:2	नवमी का श्राद्ध, नोम का श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रियों (सुहागिनों) का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत का पारण,
12	शनि	आश्विन	कृष्ण	दशमी	27:59	दशमी का श्राद्ध,
13	रवि	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	27:04	इंदिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध, ग्यारस का श्राद्ध,
14	सोम	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	25:20	द्वादशी का श्राद्ध, बारस का श्राद्ध, संन्यासियों-यति व वैष्णवों का श्राद्ध, रेंटिया बारस,
15	मंगल	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी	22:54	त्रयोदशी का श्राद्ध, तेरस का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, भोम-प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत,
16	बुध	आश्विन	कृष्ण	चतुर्दशी	19:53	दुर्मरण श्राद्ध, (आज के दिन शस्त्र, विष, अग्नि, जल, दुर्घटना आदि से अकाल मृत्यु में मरे व्यक्ति का श्राद्ध), चतुर्दशी का श्राद्ध, चौदस का श्राद्ध,

						सूर्य की कन्या संक्रान्ति 07:23 संध्या बजे, कन्या संक्रान्ति स्नान-दान का पुण्य काल 12:16 दोपहर से 06:25 दोपहर (6 घण्टे 09 मिनट),महापुण्य काल 04:22 दोपहर से 06:25 दोपहर(2 घण्टे 03 मिनट),
17	गुरु	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	16:29	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम आश्विनी अमावस्या, पितृविसर्जनी अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, आज अज्ञात मरण तिथिवाले पूर्वजों का श्राद्ध, नाती द्वारा नाना-नानी का श्राद्ध, अमावस्या पुण्यकाल सायं 04:29 बजे तक, महालया समाप्त, विश्वकर्मा पूजा
18	शुक्र	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	प्रतिपदा	12:53	आश्विन (अधिक), नवीन चंद्र दर्शन, पुरुषोत्तम मास (अधिक मास या मल मास) प्रारंभ, विद्वानों के मत से इस मास में धर्मादि कार्य से अनंत पुण्यफल की प्राप्ति,
19	शनि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	द्वितीया-तृतीया	09:15 -29:47	तृतीया तिथि क्षय
20	रवि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	चतुर्थी	26:37	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत (चं.अस्त.रा.08:38)
21	सोम	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	पंचमी	23:55	-
22	मंगल	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	षष्ठी	21:45	-
23	बुध	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	सप्तमी -	20:13	-
24	गुरु	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	अष्टमी	19:18	-
25	शुक्र	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	नवमी	19:00	-
26	शनि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	दशमी	19:15	-
27	रवि	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	एकादशी	20:00	पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत, पद्मिनी एकादशी व्रत,
28	सोम	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	द्वादशी	21:10	
29	मंगल	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	त्रयोदशी	22:41	अधिक प्रदोष व्रत, भोम-प्रदोष व्रत,
30	बुध	आश्विन (अधिक)	शुक्ल	चतुर्दशी	24:30	मासिक शिवरात्रि व्रत,

सितम्बर 2020 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
04	दोपहर 11:29 से अगले दिन प्रात: 06:01 तक	14	प्रात: 06:06 से दोपहर 03:51 तक
06	प्रात: 06:03 से अगले दिन प्रात: 05:24 तक	15	प्रात: 05:56 से दोपहर 01:04 तक
08	सुबह 08:27 से अगले दिन प्रात: 06:03 तक	20	देर रात 01:22 से प्रात: 06:09 तक
09	प्रात: 06:04 से अगले दिन प्रात: 06:03 तक	21	रात 08:50 से अगले दिन प्रात: 06:10 तक
13	दोपहर 04:34 से अगले दिन प्रात: 06:05 तक	26	सुबह 07:28 से अगले दिन प्रात: 06:11 तक
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना फल दायक)			
08	देर रात 12:03 से अगले दिन प्रात: 06:03 तक		
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)			
19	प्रात: 06:09 से सुबह 09:10 तक	27	रात 08:51 से प्रात: 06:12 तक
विघ्नकारक भद्रा			
01	सुबह 09:37 से रात 10:12 तक	15	रात 11:00 से अगले दिन सुबह 09:32 तक
05	देर रात 03:29 से दोपहर 04:39 तक,	20	दोपहर 03:59 से देर रात: 26:26 तक,
09	देर रात 12:02 से दोपहर 01:08 तक,	23	रात 07:55 से अगले दिन सुबह 07:25 तक
12	दोपहर 04:23 से अगले दिन प्रात: 04:14 तक,	27	सुबह 07:19 से रात: 07:47 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

सितम्बर 2020 रवि योग

01	प्रात: 06:00 से दोपहर 04:38 तक	22	प्रात: 06:10 से संध्या 07:18 तक
08	सुबह 08:27 से अगले दिन प्रात: 06:02 तक	24	प्रात: 06:11 से अगले दिन प्रात: 06:11 तक
09	प्रात: 06:02 से दोपहर 11:15 तक	25	प्रात: 06:12 से अगले दिन प्रात: 06:12 तक
20	देर रात 01:22 से दिन 10:51 तक	26	प्रात: 06:12 से संध्या 07:25 तक
21	रात 08:50 से अगले दिन प्रात: 06:10 तक	27	देर रात 12:46 से अगले दिन रात 08:50 तक

सूर्यभाद्वेदगोतर्क दिग्विश्व नखसम्मिते ।

चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः

अर्थात: सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करने पर यदि यह 4, 6, 9, 10, 13, 20 (नक्षत्र क्रम से आगे हो) यह क्रम में कोई भी एक क्रम का नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन **रवि योग** होता है। नक्षत्र का यह समय **रवि योग** का समय होता है।

सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का राजा है। सौरमंडल में सबसे उर्जावान ग्रह सूर्य है जिस्से हमें प्रकाश एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रुपसे उर्जा जीवन उर्जा प्राप्त होती है। सूर्य को हिंदू धर्म में सूर्य को बहुत पवित्र देव माना जाता है एवं सूर्य की पूजा-उपासना की जाती है। नौ ग्रहों में सूर्य को श्रेष्ठ ग्रह माना जाता है।

- ❖ इस लिए रवि योग भी योगों में उत्तम एवं शुभफलदाय माना जाता है। यह रवि योग सभी प्रकार के दोषों एवं अशुभ प्रभावों को दूर करता है।
- ❖ यदि किसी दिन शुभ कार्य करना अनिवार्य हो एवं एवं उस दिन कोई शुभ मुहूर्त न हो तो शुभ कार्य **रवि योग** में कर सकते है।
- ❖ रवि योग में कार्यों में वांछित अफलता प्राप्त होती हैं इस लिए यह अत्यंत लाभदायक योग है।
- ❖ रवि योग के दिन भगवान सूर्य की पूजा करना उत्तम होता है।
- ❖ रवि योग के दिन सूर्य देवता को अर्घ्य देना भी विशेष लाभ होता है।
- ❖ रवि योग के दिन सूर्य मंत्र का जप करना विशेष लाभदायक होता है।
- ❖ रवि योग को सूर्य देव का वरदान प्राप्त है इस लिए यह अत्याधिक प्रभावशाली है।
- ❖ रवि योग में किए गए सभी शुभ कार्यों में किसी भी प्रकार के विघ्न एवं बाधाएं उत्पन्न नहीं होती है तथा कार्य में शीघ्र सफलता मिलती है।
- ❖ रवि योग में दूरस्थान की यात्राएं शुभफलदायक होती है।
- ❖ रवि योग में कर्ज मुक्ति के प्रसाय करने से कर्ज से शीध्र मुक्ति मिल सकती है।
- ❖ रवि योग में स्वास्थ्य वृद्धि के सभी प्रकार के प्रयास अथवा शल्य चिकित्सा उत्तम होती है।
- ❖ रवि योग में लंबे समय से रुके हुए कार्य को पूर्ण करने का प्रयास भी विशेष लाभदाय सिद्ध होता है।

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

इंदिरा एकादशी व्रत 13-सितम्बर-2020 (रविवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

इंदिरा एकादशी व्रत कथा

आश्विन : कृष्ण एकादशी

एक बार युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! आश्विन कृष्ण एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है ?" व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **इंदिरा एकादशी** है। यह एकादशी पापों को नष्ट करने वाली तथा पितरों को अधोगति से मुक्ति देने वाली होती है। हे राजन! ध्यानपूर्वक इसकी कथा सुनो। इसके सुनने मात्र से ही वायपेय यज्ञ का फल मिलता है।

प्राचीनकाल में सतयुग के समय में महिष्मति नाम की एक नगरी में इंद्रसेन नाम का एक प्रतापी राजा धर्मपूर्वक अपनी प्रजा का पालन करते हुए शासन करता था। वह राजा पुत्र, पौत्र और धन आदि से संपन्न और विष्णु का परम भक्त था। एक दिन जब राजा सुखपूर्वक अपनी सभा में बैठा था तो आकाश मार्ग से महर्षि नारद उतरकर उसकी सभा में पधारे। राजा उन्हें देखते ही हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और विधिपूर्वक आसन व अर्घ्य दिया।

इंदिरा एकादशी

आनंद पूर्वक बैठकर नारदजी ने राजा से पूछा कि हे राजन! आपके सातों अंग कुशलपूर्वक तो हैं? तुम्हारी बुद्धि धर्म में और तुम्हारा मन विष्णु भक्ति में तो रहता है? देवर्षि नारद की ऐसी बातें सुनकर राजा ने कहा- हे महर्षि! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल-मंगल है तथा मेरे यहाँ यज्ञ कर्मादि सुकृत हो रहे हैं। आप कृपा करके अपने आगमन का कारण बताए। तब ऋषि कहने लगे कि हे राजन! आप आश्चर्य देने वाले मेरे वचनों को सुनो।

मैं एक समय ब्रह्मलोक से यमलोक को गया, वहाँ श्रद्धापूर्वक यमराज से पूजित होकर मैंने धर्मशील और सत्यवान धर्मराज की प्रशंसा की। उसी यमराज की सभा में महान ज्ञानी और धर्मात्मा तुम्हारे पिता को एकादशी का व्रत भंग होने के कारण देखा। उन्होंने संदेशा भेजा हैं, जो मैं तुम्हें कहता हूँ। उन्होंने कहा कि पूर्व जन्म में कोई

विघ्न हो जाने के कारण मैं यमराज के निकट रह रहा हूँ, सो हे पुत्र यदि तुम आश्विन कृष्णा इंदिरा एकादशी का व्रत मेरे निमित्त करो तो मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।

इतना सुनकर राजा कहने लगा कि हे महर्षि आप इस व्रत की विधि मुझसे कहिए। नारदजी कहने लगे- आश्विन माह की कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर पुन: दोपहर को नदी आदि में जाकर स्नान करें।

फिर श्रद्धापूर्व पितरों का श्राद्ध करें और एक बार भोजन ग्रहण करें। प्रात:काल होने पर एकादशी के दिन दातून आदि करके स्नान करें, फिर व्रत के नियमों को भक्तिपूर्वक ग्रहण करता हुआ प्रतिज्ञा करें कि 'मैं आज संपूर्ण भोगों को त्याग कर निराहार एकादशी का व्रत करूँगा।

हे प्रभु! हे पुंडरीकाक्ष! मैं आपकी शरण हूँ, आप मेरी रक्षा कीजिए, इस प्रकार नियमपूर्वक शालिग्राम की मूर्ति के आगे विधिपूर्वक श्राद्ध करके योग्य ब्राह्मणों को फलाहार का भोजन कराएँ और दक्षिणा दें। पितरों के श्राद्ध से जो बच जाए उसको सूँघकर गौ को दें तथा धूप, दीप, गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि सब सामग्री से ऋषिकेश भगवान का पूजन करें।

रात में भगवान के निकट जागरण करें। इसके पश्चात द्वादशी के दिन प्रात:काल होने पर भगवान का पूजन करके ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। भाई-बंधुओं, स्त्री और पुत्र सहित आप भी मौन होकर भोजन करें। नारदजी कहने लगे कि हे राजन! इस विधि से यदि तुम आलस्य रहित होकर इस एकादशी का व्रत करोगे तो तुम्हारे पिता अवश्य ही स्वर्गलोक को जाएँगे। इतना कहकर नारदजी अंतर्ध्यान हो गए।

नारदजी के कथनानुसार राजा द्वारा अपने बाँधवों तथा दासों सहित व्रत करने से आकाश से पुष्पवर्षा हुई और उस राजा का पिता गरुड़ पर चढ़कर विष्णुलोक को गया। राजा इंद्रसेन भी एकादशी के व्रत के प्रभाव से निष्कंटक राज्य करके अंत में अपने पुत्र को सिंहासन पर बैठाकर स्वर्गलोक को गया।

हे युधिष्ठिर! यह इंदिरा एकादशी के व्रत का माहात्म्य मैंने तुमसे कहा। इसके पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं और सब प्रकार के भोगों को भोगकर बैकुंठ को प्राप्त होते हैं।

पद्मिनी एकादशी व्रत 27-सितम्बर-2020 (रविवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पद्मिनी एकादशी व्रत कथा

अधिक (मल या पुरुषोत्तम या लौंद) मास : शुक्ल एकादशी

अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! अधिक मास शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है ? व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **पद्मिनी एकादशी** है। यह अनेक प्रकार के पापों को नष्ट करने वाली तथा मुक्ति प्रदान करने वाली है तथा व्रत के प्रताप से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। हे पार्थ! ध्यानपूर्वक इसकी कथा सुनो!

व्रत की विधि

पद्मिनी एकादशी व्रत के निमित्त दशमी के दिन से ही व्रत को शुरु कर देना चाहिए। इस दिन मांसाहार, मसूर, चना, कोदों, शहद, शाक और किसी अन्य द्वारा दिया गया अन्न, इन सब खाद्य पदार्थों का त्याग करना चाहिए। कांसे के पात्र का प्रयोग वर्जित है। अतः दिन बीना नमक का हविष्य भोजन करना चाहिए। दशमी के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए रात्रि को भूमि पर शयन करना चाहिए।

एकादशी के दिन प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर पुण्य क्षेत्र में स्नान करने के लिए जाना चाहिए। स्नान करने से पहले शरीर में मिट्टी लगाते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। कि हे मृत्तिके! मैं तुमहें नमस्कार करता हूं। तुम्हारे स्पर्श से मेरा शरीर पवित्र हो। समस्त औषधियों से उत्पन्न हुई तथा पृथ्वी को पवित्र करने वाली, तुम मुझे शुद्ध करो । ब्रह्मा के थूक से उत्पन्न होने वाली ! तुम मेरे शरीर को छूकर मुझे पवित्र करो । हे शंख-चक्र-गदा धारी देवों के देव श्रीजगन्नाथ ! आप मुझे स्नान के लिए आज्ञा दीजिये। उसके बाद में स्नान हेतु गोबर, मृत्तिका, तिल, कुश तथा आमलकी चूर्ण का उपयोग कर से विधि पूर्वक स्नान करना चाहिए।

पुण्य क्षेत्र में जाने की सुविधा न हो तो वरुण मंत्र को जपकर उनका स्मरण करते हुए किसी तालाब में स्नान करना चाहिए। स्नान करने के उपरांत स्वच्छ सुंदर वस्त्र धारण करके तथा विधि-पूर्वक संध्या, तर्पण करके मंदिर में जाके भगवान का धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, केशर आदि से पूजन करना चाहिए। पूजाके उपरान्त भगवान के सम्मुख नृत्य-गान आदि करना चाहिए। भगवान के सामने पुराण की कथा सुननी चाहिए।

इंदिरा एकादशी

पद्मिनी एकादशी का व्रत निर्जल करना चाहिए। यदि कोई निर्जल तथा निराहार रहने असमर्थ हो तो उसे केवल जलपान या अल्पाहार करके व्रत करना चाहिए। रात्रि में जागरण करके नृत्य-गान आदि करके भगवान का स्मरण करते रहना चाहिए। हर पहर में भगवान या महादेवजी की पूजा करनी चाहिए।

प्रथम पहर में भगवान् को नारियल, दूसरे पहर में बिल्वफल(बेल), तीसरे पहर में सीताफल और चौथे पहर में सुपारी, नारंगी अर्पण करनी चाहिए। इससे प्रथम पहर का अग्नि होम के समान, दूसरे पहर का वाजपेय यज्ञ के समान, तीसरे पहर का अश्वमेध यज्ञ के समान और चौथे पहर का राजसूय यज्ञ के समान फल मिलता है।

पद्मिनी एकादशी से बढ़कर संसार में अन्य कोई यज्ञ, तप, दान या पुण्य नहीं है। पद्मिनी एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति को समस्त तीर्थ और यज्ञों का फल मिल जाता है। इस प्रकार से सूर्योदय तक जागरण

करना चाहिए। प्रातः नित्यकर्म एवं स्नान आदि से निवृत्त होकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार जो व्यक्ति विधि-पूर्वक भगवान का पूजान तथा व्रत करते हैं, उनका जन्म सफल हो जाता है। व्यक्ति जीवन में अनेक सुखों को भोगकर अन्त में भगवान विष्णु के परमधाम को जाते हैं।

हे पार्थ! मैंने तुम्हें पद्मिनी एकादशी के व्रत का पूरा विधान बता दिया। अब जो पहले पद्मिनी एकादशी का भक्तिपूर्वक व्रत कर चुके हैं, उनकी कथा को कहता हूँ, तूम ध्यानपूर्वक सुनो।, यह कथा पुलस्त्यजी ने नारदजी से कही थी।

एक समय कार्तवीर्य ने रावण को अपने बंदीगृह में बन्द कर लिया था। उसे मुनि पुलस्त्य ने कार्तवीर्य से छुड़ाया था। इस घटना को सुनकर नारदजी ने पुलस्त्यजी से पूछा हे महाराज ! उस मायावी रावण को, जिसने समस्त देवताओं सहित इन्द्र को भी जीत लिया था, उसे कार्तवीर्य ने किस प्रकार जीता, सो आप मुझे बताये।

पुलस्त्यजी बोले हे नारदजी! आप संपूर्ण वृत्तांत सुनो त्रेतायुग में महिष्मती नामक नगरी में एक राजा राज्य करता था। उस राजा की सौ स्त्रियां थीं, उसमें से किसी को भी राज्य भार संभालने के लिए योग्य पुत्र नहीं था। इसलिए राजा ने आदर पूर्वक नगर के पण्डितों को बुलवाया और पुत्र की प्राप्ति के लिए यज्ञ किये, परन्तु सब असफल रहे। जिस प्रकार दुःखी मनुष्य को उत्तम भोग भी नीरस मालूम पड़ते हैं, उसी प्रकार राजा को भी अपना राज्य पुत्र बिना दुःखमय प्रतीत होता था। अन्त में वह तप के द्वारा ही सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं यह जानकर तपस्या करने के लिए वन में चला गया।

उसकी स्त्री प्रमदा भी वस्त्र अलंकारों को त्याग कर अपने पति के साथ गन्धमादन पर्वत पर चली गई। उस स्थान पर इन लोगों ने दस हजार वर्ष तक तपस्या की लेकिन फिर भी सिद्धि प्राप्त न हो सकी। अब राजा के शरीर में केवल हडिडयां रह गईं। यह देख कर प्रमदा ने विनय सहित महासती अनसूयाजी से पूछा मेरे पतिदेव को तपस्या करते हुए दस हजार वर्ष बीत गये, परन्तु अभी तक भगवान प्रसन्न नहीं हुए हैं, जिससे मुझे पुत्र प्राप्त हो। कृपया उपाय बताइये।

अनसूयाजी बोली कि अधिक मास में दो एकादशी होती हैं। इसमें शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम **पद्मिनी** और कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम परमा है। उसके व्रत और जागरण करने से भगवान तुम्हें अवश्य ही पुत्र देंगे।

फिर अनसूयाजी ने व्रत की संपूर्ण विधि बतलाई। रानी ने अनसूया की बतलाई विधि के अनुसार एकादशी का व्रत और रात्रि में जागरण किया। इससे भगवान विष्णु उस पर बहुत प्रसन्न हुए और वरदान मांगने के लिए कहा। रानी ने कहा आप यह वरदान मेरे पति को दीजिए।

प्रमदा का वचन सुनकर भगवान् विष्णु बोले हे प्रमदे! अधिक मास मुझे बहुत प्रिय है। उसमें भी एकादशी तिथि मुझे सबसे अधिक प्रिय है। इस एकादशी का व्रत तथा रात्रि जागरण तुमने संपूर्ण विधि-पूर्वक किया है। इसलिए मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं।

भगवान विष्णु पुनः बोले हे राजेन्द्र! तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर मांगो। क्योंकि तुम्हारी स्त्री ने मुझको प्रसन्न किया है।

भगवान की मधुर वाणी सुनकर राजा बोला हे भगवन् ! आप मुझे सबसे श्रेष्ठ, सबके द्वारा पूजित तथा आपके अतिरिक्त देव, दानव, मनुष्य आदि से अजेय उत्तम पुत्र दीजिए।

भगवान विष्णु तथास्तु कहकर अन्तर्धान हो गये। उसके बाद वे दोनों अपने राज्य को वापस आ गये। उन्हीं के यहां कार्तवीर्य उत्पन्न हुए थे। वह भगवान के अतिरिक्त सबसे अजेय थे। इसलिए इन्हों ने रावण को जीत लिया था। यह सब **पद्मिनी** के व्रत का प्रभाव था। इतना कहकर पुलस्त्यजी वहां से चले गये।

भगवान बोले हे अर्जुन! मैंने अधिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कहा है।

जो मनुष्य इस व्रत को विधि-पूर्वक करता है, वह विष्णु लोक में जाता है।

सूतजी बोले हे महर्षियो जो मनुष्य इसकी कथा को सुनेंगे वे स्वर्ग लोक को जाएंगे।

अधिक मास का धार्मिक महत्व

चिंतन जोशी

भारतीय पंचांग (खगोलीय गणना) के अनुसार हर तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है। यह सौर और चंद्र मास को एक समान लाने की गणितीय प्रक्रिया है। शास्त्रोंक्त मतानुशार पुरुषोत्तम मास में किए गए जप, तप, दान से अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है। सूर्य की बारह संक्रांति होती हैं और इसी आधार पर हमारे चंद्र पर आधारित 12 माह होते हैं। हर तीन वर्ष के अंतराल पर अधिक मास या मलमास आता है।

शास्त्रों में उल्लेख हैं:

यस्मिन चांद्रे न संक्रान्तिः सो अधिमासो निगह्यते
तत्र मंगल कार्यानि नैव कुर्यात कदाचन्।
यस्मिन मासे द्वि संक्रान्ति क्षयः मासः स कथ्यते
तस्मिन शुभाणि कार्याणि यत्नतः परिवर्जयेत।।

कार्तिक, मार्ग व पौस मासों में होता है। जिस वर्ष क्षय मास पड़ता है, उसी वर्ष अधि-मास भी पड़ता है परन्तु यह स्थिति 19 वर्षों या 141 वर्षों के पश्चात् आती है।

पंचांग में अधिक मास क्या हैं?

विद्वानो के मतानुशार एक सौर वर्ष और चांद्र वर्ष के बिच में सामंजस्य स्थापित करने के लिए हर तीसरे वर्ष पंचांगों में एक चान्द्रमास की वृद्धि होती है। इसी को अधिक मास या अधिमास या मलमास कहते हैं। सौर वर्ष का मान 365 दिन, 15 घड़ी, 22 पल और 57 विपल हैं। जबकि चांद्रवर्ष 354 दिन, 22 घड़ी, 1 पल और 23 विपल का होता है। इस प्रकार दोनों वर्षमानों में प्रतिवर्ष 10 दिन, 53 घटी, 21 पल (अर्थात लगभग 11 दिन) का अन्तर पड़ता है। इस अन्तर में समानता लाने के लिए चांद्रवर्ष 12 मासों के स्थान पर 13 मास का हो जाता है। वास्तव में यह स्थिति स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि जिस चंद्रमास में सूर्य संक्रांति नहीं पड़ती, उसी को अधिक मास की संज्ञा दे दी जाती है तथा जिस चंद्रमास में दो सूर्य संक्रांति का समावेश हो जाय, उसे क्षयमास कहाँ जाता है। प्रायः क्षयमास

18 सितम्बर

अधिक मास के संदर्भ में विभिन्न मत

- अधिक मास को कई नामों से जाना जाता है - अधिमास, मलमास, पुरुषोत्तममास, मलिम्लुच, संसर्प, अंहस्पति या अंहसस्पति। इनकी व्याख्या आवश्यक है। यह स्पष्ट है कि बहुत प्राचीन काल से अधिक मास अशुभ ठहराये गए हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख हैं की देवों ने सोम की लता 13वें मास में ख़रीदी, जो व्यक्ति इसे बेचता है वह पतित है, 13वाँ मास फलदायक नहीं होता।
- तैतरीय संहिता में 13 वें मास को संसर्प एवं अंहस्पति कहा गया है।
- ऋग्वेद के अनुशार अंहस् का अर्थ पाप बताया गया है। यह अतिरिक्त मास है, अतः अधिमास या अधिक मास नाम पड़ गया है। इसे मलमास इसलिए कहा जाता है कि मानों यह काल का मल है।

- अथर्ववेद में मलिम्लुच बताया गया है, लेकिन इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है।
- काठसंहिता में अधिक मास का उल्लेख किया गया है।
- पश्चात्कालीन साहित्य में मलिम्लुच का अर्थ है चोर बताया गया हैं।
- मलमासतत्त्व में यह व्युत्पत्ति हैः मली सन् म्लोचति गच्छतीति मलिम्लुचः
- अर्थात् मलिन (गंदा) होने पर यह आगे बढ़ जाता है।
- संसर्प एवं अंहसस्पति शब्द का वर्णन वाजसनेयी संहिता में तथा अंहसस्पतिय वाजसनेयी संहिता में मिलता हैं।
- अंहसस्पति का शाब्दिक अर्थ है पाप का स्वामी।
- पौराणिक गंथों में संसर्प एवं अंहसस्पति के अंतर को स्पष्ट शब्दों में विभाजित किया गया हैं। जब एक वर्ष में दो अधिमास हों और एक क्षय मास हो तो दोनों अधिमासों में प्रथम संसर्प कहा जाता है और यह विवाह को छोड़कर अन्य धार्मिक कृत्यों के लिए अशुभ माना जाता है।
- अंहसस्पति क्षय मास तक सीमित है। कुछ पुराणों में गंथकारों ने अधिमास को पुरुषोत्तम मास कहा है और सम्भव है, अधिमास की अशुभता को कम करने के लिए ऐसा नाम दिया गया हैं, क्योकि भगवान विष्णु को पुरुषोत्तम कहा जाता हैं।
- विभिन्न ग्रन्थों में अधिमास के विषय विभिन्न जानकारीया प्राप्त होती है-
- अधिमास में वर्जित कार्य के संदर्भ में अग्नि पुराण में उल्लेख किया गया है वैदिक पद्धति से अग्नि को प्रज्वलित करना, मूर्ति प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, व्रत, संकल्प के साथ वेद-पाठ, साँड़ छोड़ना (वृषोत्सर्ग), चूड़ाकरण, उपनयन, नामकरण, अभिषेक आदि कार्य अधिमास में नहीं करने चाहिए।
- हेमाद्रि में वर्जित एवं मान्य कृत्यों का उल्लेख करते हुए कहां हैं
- मलमास में नित्य कर्मों एवं नैमितिक कर्मों (कुछ विशिष्ट अवसरों पर किए जाने वाले कर्मों) को सुचारु रुप से करते रहना चाहिए, यथा सन्ध्या, पूजा, पंचमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, वैश्वदेव आदि), अग्नि में हवि डालना (अग्निहोत्र के रूप में), ग्रहण-स्नान नैमित्तिक है, अन्त्येष्टि कर्म भी आकस्मिक अर्थात नैमित्तिक हैं। यदि शास्त्र कहता है कि यह कृत्य (यथा सोम यज्ञ) नहीं करना चाहिए तो उसे अधिमास में स्थगित कर देना चाहिए।
- यह भी सामान्य नियम है कि काम्य कर्म(जो नित्य नहीं किया जाता, जो केवल किसी फल की प्राप्ति के लिए किया जाता है) उसे नहीं करना चाहिए। कुछ अपवाद भी हैं, यथा कुछ कर्म, जो कर्म अधिमास के पूर्व ही आरम्भ हो गए हों (यथा 12 दिनों वाला प्राजापत्य प्रायश्चित, एक मास वाला चन्द्रायण व्रत), अधिमास तक भी चलाए जा सकते हैं। यदि दुर्भिक्ष हो, वर्षा न हो रही हो तो उसके लिए कारीरी इष्टि अधिमास में करना वर्जित नहीं है, क्योंकि ऐसा न करने से हानि हो जाने की सम्भावना रहती है। इस का विवरण कालनिर्णय-कारिका में वर्णित हैं।
- कुछ जानकारों का कथ हैं की मलमास की प्रतिदिन या कम से कम एक दिन ब्राह्मणों को 33 अपूपों (पूओं) का दान करना चाहिए।

- वापी एवं तड़ाग (बावली एवं तलाब) खुदवाना, कूप बनवाना, यज्ञ कर्म, महादान एवं व्रत जैसे कर्म को केवल शुद्ध मासों में ही करना चाहिए।
- गर्भ का कृत्य (पुंसवन जैसे संस्कार), ब्याज लेना, पारिश्रमिक देना, मास-श्राद्ध (अमावस्या पर), आह्निक दान, अन्त्येष्टि क्रिया, नव-श्राद्ध, मघा नक्षत्र की त्रयोदशी पर श्राद्ध, सोलह श्राद्ध, चान्द्र एवं सौर ग्रहणों पर स्नान, नित्य एवं नैमित्तिक कृत्य होने के कारण यह कर्म अधिमास एवं शुद्ध मास, दोनों में किए जा सकते हैं,

अधिक मास में किये जाने वाले कर्म

इस माह में व्रत, दान, पूजा, हवन, ध्यान करने से पाप कर्म समाप्त हो जाते हैं और किए गए पुण्यों का फल कई गुणा अधिक प्राप्त होता है। देवी भागवत पुराण में उल्लेख हैं की मलमास में किए गये सभी शुभ कर्मो का फल अनंत गुना प्राप्त होता है। इस माह में भागवत कथा श्रवण करने का विशेष महत्व है। पुरुषोत्तम मास में तीर्थ स्थलों पर स्नान का भी विशेष महत्त्व है।

पुरुषोत्तम मास में शुभ कार्य वर्जित क्यों?

हिन्दु पंचांग में तिथि, वार, नक्षत्र एवं योग के अतिरिक्त सभी मास के कोई न कोई देवता या स्वामी हैं, परंतु मलमास या अधिक मास का कोई स्वामी नहीं होता, अतः इस माह में सभी प्रकार के मांगलिक कार्य, शुभ एवं पितृ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

पुराण में वर्णित पुरुषोत्तम मास का नाम करण

अधिक मास स्वामी के ना होने पर विष्णुलोक पहुंचे और भगवान श्रीहरि से अनुरोध किया कि सभी माह अपने स्वामियों के आधिपत्य में हैं और उनसे प्राप्त अधिकारों के कारण वे स्वतंत्र एवं निर्भय रहते हैं। एक मैं ही भाग्यहीन हूँ जिसका कोई स्वामी नहीं है, अतः हे प्रभु मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिलाइए। अधिक मास की प्रार्थना को सुनकर श्री हरि ने कहा हे मलमास मेरे अंदर जितने भी सद्गुण हैं वह मैं तुम्हें प्रदान कर रहा हूं और मेरा विख्यात नाम पुरुषोत्तम मैं तुम्हें दे रहा हूं और तुम्हारा मैं ही स्वामी हूं। तभी से मलमास का नाम पुरुषोत्तम मास हो गया और भगवान श्री हरि की कृपा से ही इस मास में भगवान का कीर्तन, भजन, दान-पुण्य करने वाले मृत्यु के पश्चात श्री हरि धाम को प्राप्त होते हैं।

शास्त्रोंक्त मत

असन्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्
द्विसन्क्रन्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् । (ज्योतिःशास्त्र)

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतति ह्यधिमासकः ॥
(वसिष्ठसिद्धान्त)

वरुणः सूर्यो भानुस्तपनश्चण्डो रविर्गभस्तिश्च ।
अर्यमहिरण्यरेतोदिवाकरा मित्रविष्णू च ॥ (ज्योतिःशास्त्र)

न कुर्यादधिके मासि काम्यं कर्म कदाचन । (स्मृत्यन्तर)

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके ।
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ॥
दीक्षोमौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्व इज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥
(मुहूर्तचिन्तामणि)

धर्मग्रंथों में वर्णित अधिक (पुरुषोत्तम) मास में त्याज्य कर्म

धर्मग्रंथों में अधिक मास में फल-प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले समस्त नैमित्तिक कर्म वर्जित कहे गए हैं। जिसमें विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृह-प्रवेश, गृहारम्भ, नये व्यापार का शुभारंभ, नववधु का प्रवेश, दीक्षा-ग्रहण, देव-प्रतिष्ठा, सकाम यज्ञादि का अनुष्ठान, अष्टका श्राद्ध तथा बहुमूल्य वस्तु, भूमि, आभूषण, वस्त्र, गाड़ी आदि का खरीदना अर्थात् समस्त काम्य **(सांसारिक)** कर्मों का निषेध किया गया है। अधिक मास में केवल भगवान पुरुषोत्तम **(श्रीहरि)** की प्रसन्नता के लिए किये जाने वाले निष्काम भाव के व्रत, उपवास,

स्नान, दान या पूजनादि किए जाते हैं। अधिक मास में पुरुषोत्तम-माहात्म्य का पाठ, भगवान् विष्णु अथवा श्रीकृष्ण की उपासना, जप, व्रत, दानादि कृत्य करना चाहिए।

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार पुरुषोत्तम मास में गेहूं, चावल, मूंग, जौ, मटर, तिल, ककड़ी, बथुआ, कटहल, केला, घी, आम, जीरा, सोंठ, सुपारी, इमली, आंवला, सेंधानमक आदि का सेवन करना चाहिए।

परन्तु यह ध्यान रहे कि पुरुषोत्तम मास में उड़द, राई, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, गोभी, दाल, शहद, तिल का तेल, तामसिक भोजन, पराया अन्न, मसाला-तम्बाकू, मदिरा सर्वथा त्याग दें। केवल एक समय सात्विक भोजन, नित्य भजन-संकीर्तन तथा यथासम्भव भूमि पर शयन करना चाहिए।

विद्वानो नें अधिक मास में वर्जित कृत्यों को विस्तार से बताते हुए कहां हैं की जो पहले कभी न देखे हुए देव और तीर्थोंका निरीक्षण, संन्यास, अग्निपरिग्रह (अग्निका स्थायी स्थापन); राजाके दर्शन, अभिषेक, प्रथम यात्रा, चातुर्मासीय व्रतोंका प्रथमारम्भ, कर्ण-वेध और परीक्षा ये सब काम अधिमासमें और गुरु या शुक्रके अस्त तथा उनके शिशुत्व और बालत्वके तीन तीन दिनोंमे और न्यून मासमें भी सर्वथा वर्जित हैं। इनके अतिरिक्त तीव्र ज्वरादि प्राणघातक रोगादिकी निवृत्तिके रुद्रजपादि अनुष्ठान; कपिलषष्ठी जैसे अलभ्य योगोंके प्रयोगः अनावृष्टिके अवसरमें वर्षा करानेके पुरश्चरण; वषटकारवर्जित आहुतियोंका हवन; ग्रहणसम्बन्धी श्राद्ध; दान और जपादि; पुत्रजन्मके कृत्य और पितृमरणके श्राद्धदि तथा गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्त जैसे संस्कार और नियत अवधिमें समाप्त करनेके पूर्वागत प्रयोगादि किये जा सकते हैं ।
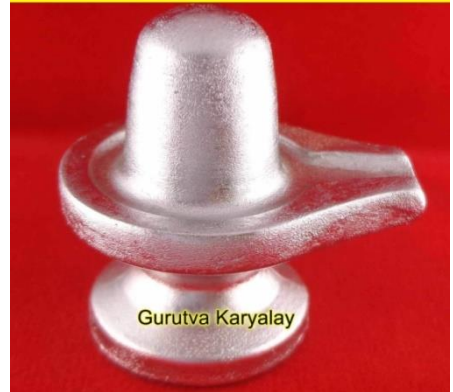
श्राद्ध कर्म के दिन का चयन।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में वर्ष भर में विभिन्न प्रकार के व्रत-पर्व-त्यौहार एवं धार्मिक अनुष्ठान किये जाते है। जिस में श्राद्ध कर्म भी एक हैं। श्राद्ध कर्म को विशेष समय पर ही संपन्न करने का विधान है।

अमायुगमनुक्रान्तिधृतिपातमहालयाः।
अष्टकान्वष्टका पूर्वेद्युः श्राद्धैर्नवतिश्च षट्॥
(धर्मसिंधु)

अर्थातः बारह महीनों की बारह अमावस्या तिथि, सत्ययुग, त्रेतादि चार युगों की प्रारम्भकी चार युगादि तिथियाँ, मनुओं के आरम्भेकी चौदह मन्वादि तिथियाँ, बारह संक्रान्तियाँ, बारह वैधृति योग, बारह व्यतीपात योग, पंद्रह पितृपक्ष (महालय) के श्राद्ध, पाँच अष्टका, पाँच अन्वष्टका तथा पाँच पूर्वेद्युः। ये सभी श्राद्ध के कुल 96 अवसर है।

- वर्ष भर में किसी भी अमावस्या के दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
- सूर्य के राशि परिवर्तन के दिन अर्थात संक्रांति के दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
- पितृ पक्ष (श्राद्ध पक्ष या महालया) में पूर्णिमा से अमावस्या तक के दिनों में तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
- यदि किसी दिन वैधृति योग अथवा व्यतिपात योग हो तो उस दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
- मन्वादि तिथि में श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।

1) चैत्र कृष्ण अमावस्या
2) चैत्र शुक्ल तृतीया
3) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
4) ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा
5) आषाढ़ शुक्ल दशमी
6) आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा
7) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
8) भाद्रपद शुक्ल तृतीया
9) आश्विन शुक्ल नवमी

10) कार्तिक शुक्ल द्वादशी
11) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
12) पौष शुक्ल एकादशी
13) माघ शुक्ल सप्तमी
14) फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा

अन्य मत से

1) चैत्र शुक्ल तृतीया
2) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
3) ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा,
4) आषाढ शुक्ल द्वादशी
5) आषाढ शुक्ल पूर्णिमा
6) श्रावण कृष्ण अष्टमी
7) भाद्र शुक्ल तृतीया
8) आश्विन शुक्ल नवमी
9) कार्तिक शुक्ल द्वादशी
10) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
11) पौष शुक्ल एकादशी
12) माघ शुक्ल सप्तमी
13) फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
14) फाल्गुन कृष्ण अमावस्या।

अष्टकाश्राद्ध (अष्टमी)

1) मार्ग कृष्ण अष्टमी
2) पौष कृष्ण अष्टमी
3) माघ कृष्ण अष्टमी
4) भाद्र कृष्ण अष्टमी

अन्वष्टका श्राद्ध (नवमी)

1) मार्ग कृष्ण नवमी,
2) पौष कृष्ण नवमी,
3) माघ कृष्णनवमी,
4) भाद्र कृष्ण नवमी।

पुर्वेदयु श्राद्ध (सप्तमी)

1) मार्ग कृष्ण सप्तमी
2) पौष कृष्ण सप्तमी
3) माघ कृष्ण सप्तमी
4) भाद्र कृष्ण सप्तमी

युगादी दिन

1) माघ कृष्ण अमावस्या
2) भाद्र कृष्ण त्रयोदशी
3) वैशाख शुक्ल तृतीया
4) कार्तिक शुक्ल नवमी

उक्त तिथि के अलावा अन्य तिथियां

कल्पादि तिथियं

1) माघ शुक्ल त्रयोदशी
2) चैत्र कृष्ण तृतीया
3) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
4) चैत्र शुक्ल पञ्चमी
5) वैशाख शुक्ल तृतीया
6) कार्तिक शुक्ल सप्तमी
7) मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी

❖ माघ मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भीष्म अष्टमी को श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ वार्षिक श्राद्ध की तिथि के दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ शुभ तिथि (जैसे जन्म तिथि) को श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ किसी योग्य ब्राह्मण के आगमन पर श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ गजच्छाया योग हो उस दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के दिन श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।
❖ श्राद्ध करने की तीव्र इच्छा व श्राद्ध की सभी सामग्री उपलब्ध हो तब श्राद्ध कर्म किया जा सकता है।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीकः 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफलः 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशरः 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं।

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्दितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्राद्ध कर्म का विधान

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सजीव शरीर की समाप्ति मृत्यु से होती हैं। मृत्यु के बाद में आत्मा शरीर को त्याग देती हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा जन्म के साथ ही शरीर में निहित होती हैं एवं मृत्यु के पश्चात् शरीर को त्याग देती हैं। आत्मा का मृत्यु के बाद में भी विनाश नहीं होता।

श्रीमद्भगवदगीता में वर्णित हैं

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

अर्थातः मनुष्य जैसे पुराने कपड़ोंको छोड़कर दूसरे नये कपड़े धारण कर लेता हैं, वेसे ही आत्मा पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होती है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

अर्थातः इस आत्मा को शस्त्र से काटा नहीं जा सकता, अग्नि उसे जला नहीं सकती, जल उसे गीला नहीं कर सकता और वायु उसे सुखा नहीं सकती हैं।

आत्मा अमर है, आत्मा ना कभी जन्म लेती हैं, ना उसकी मृत्यु होती हैं।

आत्मा इतनी सूक्ष्म होती हैं, कि जब वह शरीर को त्याग करके निकलती हैं, तब उसे कोई भी मनुष्य अपने चर्मचक्षु से नहीं देख सकता।

वालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

अर्थात्: बाल के अग्र भाग को सौ भागों में विभक्त कर दिया जाए और फिर पुनः उन सौ भागों में से एक के सौ भाग कर दिए जाएं तो उस भाग के बराबर या उसे भी छोटा-बहुत छोटा स्वरूप आत्मा का समझना चाहिए और जो अनंत भावयुक्त होने में समर्थ है।

शरीर के माध्यम से आत्मा अपने द्वारा किये गये अच्छे-बुरे कर्मों के अनुरुप सुख-दुःख एवं स्वर्ग एवं नरक को प्राप्त करती है। एक आत्मा बारंबार अलग-अलग शरीर (योनियों) को धारण करती हैं। प्रत्येक बार मृत्यु के पश्चात दूसरा जन्म अलग शरीर (योनियों) में होता है। जीव के द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार उसका नया शरीर निर्धारित होता हैं। एक शरीर के त्याग कर दूसरे शरीर में प्रवेश के लिए आत्मा को विभिन्न स्तरों से विचरण करना पड़ता है।

विद्वानों का मत हैं की केवल मनुष्य ही मृत्यु के बाद में एक आतिवाहिक (जो मरने के बाद प्राप्त होनेवाला शरीर जिसे धारणकर जीव यमलोक में जाता हैं) सूक्ष्म शरीर धारण कर सकता हैं, किसी अन्य प्राणियोंको यह सूक्ष्म शरीर प्राप्त ही नहीं होता, अन्य प्राणि मृत्यु के तुरंत बाद वायुरूपमें विचरण करके तत्काल दूसरे प्राणि की योनि के गर्भ से जन्म लेने के लिए निर्धारीत हो जाते हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्रों-पुराणोंमें मरणासन्न मनुष्य की अवस्था, मनुष्य की मृत्यु का स्वरूप, मनुष्य के कल्याण के लिये किये जानेवाले अंतिम समय के विविध प्रकारके कर्म तथा दान इत्यादि का वर्णन प्राप्त होता है।

ग्रंथोंमें मृत्यु के बाद के और्ध्वदैहिक संस्कार, पिण्डदान (दशगात्रविधि), तर्पण, श्राद्ध, एकादशाह, सपिण्डीकरण,

अशौचादि निर्णय, कर्म विपाक, पापोंके प्रायश्चित्त इत्यादि कर्मों का वर्णन भी प्राप्त होता है। मनुष्य की मृत्युके बाद उसके पारलौकिक जीवन को सुख-समृद्ध एवं शांतिपूर्ण बनाया जा सकता है। मृत्युके बाद आत्मा की सद्गति के लिए किये जाने वाले कर्तव्य की सामान्य जानकारी सभी को होनी चाहिए।

शास्त्र में उल्लेख हैं कि

देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते।
देवताभ्यो हि पूर्वं पितृणामाप्यायनं वरम्॥
(हेमाद्रि)

अर्थातः देवकार्य की अपेक्षा पितृकार्य की विशेषता अधिक मानी गयी है। इसलिए देवकार्य से पूर्व पितरों को तृप्त करना चाहिये।

श्राद्धात् परतरं नान्यच्छ्रेयस्करमुदाहृतम्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्राद्धम् कुर्याद् विचक्षणः॥
(हेमाद्रि)

अर्थातः श्राद्ध से उत्तम एवं कल्याणकारी अन्य कोई कर्म नहीं हैं। इसलिए विधिवत श्राद्ध करते रहना चाहिये।

एवं विधानतः श्राद्धम् कुर्यात् स्वविभवोचितम्।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत् प्रीणाति मानवः॥
(ब्रह्मपुराण)

अर्थातः जो विधि-विधान से अपने सामार्थ्य के अनुरूप श्राद्ध करता हैं, वह ब्रह्मा से लेकर घासतक सभी प्रकार के प्राणियों को संतृप्त कर देता हैं।

योऽनेन विधिना श्राद्धम् कुर्याद् वै शान्तमानसः।
व्यपेतकल्मषो नित्यं याति नावर्तते पुनः॥
(हेमाद्रिमें)

अर्थातः जो शांत चित से विधि-विधान से श्राद्ध करता है, वह व्यक्ति सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर जन्म-मृत्यु के बंधनों से छूट जाता हैं।

पुन्नामनरकात् त्रायते इति पुत्रः।

अर्थात जो नरक से त्राण (रक्षा) करता है, वही पुत्र है। श्राद्ध कर्म के द्वारा ही पुत्र पितृ ऋण से मुक्त हो सकता है।

शास्त्रोंके अनुसार स्वर्ग-नरक के फल भोगने के बाद जीव अपने कर्मों के अनुसार पुनः 84 लाख योनियों में भ्रमण करने लगता है। मृत्यु के बाद पुण्यात्माएं पुनः मनुष्य योनि अथवा देव योनि को प्राप्त कर लेते हैं तथा पापात्माएं अन्य प्राणियों की योनि में जन्म ग्रहण करते हैं।

इस लिए पुत्र-पौत्रा इत्यादि का यह कर्तव्य है, कि वह अपने माता-पिता तथा स्वजनों की मृत्यु के बाद में उनहें परलोक में कल्याण अथवा एवं अन्य प्राणि की योनि में भी कल्याण तथा सुख की प्राप्ति के निमित्त श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त कर्म करना चाहिए। इस लिए हिन्दू धर्म में पितृऋण से मुक्ति के लिए श्राद्ध कर्म अथवा पितृकर्म किया जाता है।

पितरो वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः।
अर्थातः पितर वाक्य और क्रिया शुद्ध होने पर ही पूजा स्वीकार करते हैं और देवता भावना शुद्ध होने पर पूजा स्वीकार करते हैं।

क्योकि देवता भावना शुद्ध होने पर पूजा तथा वाक्यमें कोई त्रुटि होने पर भी पूजा स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन पितृ कर्म में अतिरिक्त सावधानीकी रखनी चाहिए।

विभिन्न शास्त्रों-धर्मग्रंथों में वर्णित श्राद्ध कर्म की पद्धतियों के वर्णन में भिन्नता संभव हैं तथा विभिन्न प्रदेशों एवं लोक परम्पराओं में अंतर से भी इस में भिन्नता संभव हैं।

विभिन्न शास्त्रों-धर्मग्रंथों एवं विद्वानों से हमें प्राप्त जानकारी के आधार पर पाठकों के मार्गदर्श हेतु सर्वाधिक प्रचलित श्राद्ध कर्म एवं जानकारीयों को समाहित करने का प्रयास किया हैं।

श्राद्ध कर्म के प्रकार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विभिन्न शास्त्रों में श्राद्ध के अनेक प्रकार के वर्णित हैं, लेकिन पाठको के मार्गदर्शन हेतु प्रचलित प्रकार का वर्णन कर रहे हैं।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्राद्धमुच्यते।
(मत्स्यपुराण)

अर्थात: नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य श्राद्ध तीन प्रकार के होते हैं।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धि श्राद्धम थापरम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं श्राद्धं पञ्चविधं बुधैः॥
(यमस्मृति)

अर्थात: यम स्मृति में नित्य, नैमित्तिक, काम्य, नांदी एवं पार्वण कुल पांच प्रकार के श्राद्ध कर्म का उल्लेख मिलता है।

अहन्यहनि यच्छ्राद्धं तन्नित्यमिति कीर्तितम्।
वैश्वदेवविहीनम् तदशक्तावुदकेन तु॥
(भविष्यपुराण)

अर्थात: इसमें विश्वेदेवता नहीं होते तथा असमर्थता की अवस्था में केवल जल अर्पण करके इस श्राद्ध की पूर्ति हो सकती है।

विश्वामित्रस्मृति तथा भविष्यपुराण में उल्लेख है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धि श्राद्धं सपिण्डनम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं गोष्ठीं शुद्धयर्थमष्टमम्॥
कर्माङ्गं नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्।
यत्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्ट्यर्थं द्वादशं स्मृतम्॥

अर्थात: नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि, सपिण्डन, पार्वण, गोष्ठी, शुद्ध्यर्थ, कर्मांग, दैविक, यात्रार्थ तथा पुष्ट्यर्थ यह बारह प्रकार के श्राद्ध हैं।

प्रतिदिन किसी कामना की पूर्ति के किये किये जाने वाले श्राद्ध को काम्य श्राद्ध कहते हैं।

परिवार में सदस्यों की वृद्धिकाल में पुत्र जन्म तथा विवाह आदि मांगलिक कार्य में जो श्राद्ध किया जाता है, उसे वृद्धिश्राद्ध (नान्दी श्राद्ध) कहते हैं। पितृपक्ष, अमावास्या अथवा पर्व आदि के समय आने पर जो विश्वेदेवता के सहित श्राद्ध किया जाता है, उसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं।

नित्य श्राद्ध: नित्य श्राद्ध प्रतिदिन किया जाता हैं। नित्य श्राद्ध में विश्वेदेवता को स्थापित नहीं किया जाता। नित्य श्राद्ध केवल जल-तर्पण (जल से) अथवा तिल-तर्पण से भी सम्पन्न किया जा सकता है ।

नैमित्तिक श्राद्ध: किसी (मृतक) के निमित्त जो श्राद्ध किया जाता है, उसे नैमित्तिक श्राद्ध कहते हैं। नैमित्तिक श्राद्ध को एकोद्दिष्ट श्राद्ध भी कहते है। नैमित्तिक श्राद्ध में किसी एक (मृतक) के निमित्त किया जाता हैं, प्रायः यह किसी की मृत्यु के पश्चयात दशमें दिन या, ग्यारवे दिन किये जाते है। इसमें भी विश्वेदेवों को स्थापित नहीं किया जाता हैं।

काम्य श्राद्ध: किसी कामना विशेष की पूर्ति के लिए जो श्राद्ध किया जाता हैं, उसे काम्य श्राद्ध कहते हैं। काम्य श्राद्ध को विशेष फल की प्राप्ति एवं इच्छापूर्ति के लिए विशेष दिन, तिथि एवं नक्षत्र पर किये जाते हैं।

नान्दी श्राद्ध: परिवार में सदस्यों की वृद्धि जैसे पुत्र जन्म तथा विवाह, मंगलीक कार्य के आरंभ में, सोलह संस्कारों के आरंभ में, पुण्याहवाचन के समय पर मांगलीक में किया जानेवाला श्राद्ध वृद्धिश्राद्ध (नान्दी श्राद्ध) कहा जाता है।

पार्वण श्राद्ध: किसी विशेष तिथि या पर्व जैसे पितृपक्ष(महालय श्राद्ध), तीर्थ श्राद्ध, अमावास्या पर्व आदि पर किया जाने वाला श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहलाता है। इस के तीन प्रकार एकपार्वण, द्विपार्वण और त्रिपार्वण हैं, पार्वण श्राद्ध विश्वेदेव के सहित किया जाता है।

सपिण्डन श्राद्ध: शास्त्रों के मत से जब किसी की मृत्यु होती है, तो पिण्ड पहले प्रेत योनि में जाता है। तथा प्रेत पिण्ड को निकालके उसे पितृ पिण्डों में मिलाने की क्रिया सपिण्डन श्राद्ध कहलाती है। इसे सपिंडीकरण श्राद्ध भी कहा जाता है।

गोष्ठी श्राद्ध: जो श्राद्ध समूह में किया जाता है, उसे गोष्ठी श्राद्ध कहते हैं। प्रायः यह सामूहिक रुप से तीर्थक्षेत्र में अथवा किसी विशेष आवसर पर पितरों की शांति एवं सुख-समृद्धि की कामना से किया जाता हैं। अन्यत मत से वंश वृद्धि की कामना से गौशाला में किया गया श्राद्ध (दान) गोष्ठी श्राद्ध कहलाता है।

शुद्धि श्राद्ध: स्वयं की शुद्धि के निमित्त जो श्राद्ध किया जाता हैं। उसे शुद्धि श्राद्ध कहते हैं। इसमें शुद्धि के लिए श्राद्धमें ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है, इसे शुद्धयर्थ श्राद्ध अथवा प्रायाश्चित्तांग श्राद्ध भी कहा जाता है।

कर्मांग श्राद्ध: गर्भाधान संस्कार, सीमन्तोन्नयन तथा पुंसवन आदि संस्कारों में जो श्राद्ध किया जाता हैं उसे कर्मांग श्राद्ध कहते हैं।

दैविक श्राद्ध: किसी विशेष तिथि या अवसर पर देवता की कृपा प्राप्ति के लिए किए जाने वाले श्राद्ध को दैविक श्राद्ध कहते हैं।

यात्रार्थ श्राद्ध: तीर्थयात्रा अथवा अथवा दूरस्थ यात्रा पर जाने से पूर्व किए जाने वाले यात्रार्थ श्राद्ध कहते हैं। पितरों को स्मरण कर यात्रा में सुरक्षा एवं विघ्न-बाधाओं के निवारण के लिए यह श्राद्ध किया जाता हैं। इस श्राद्ध को घी से किया जाता हैं। इसे घृत श्राद्ध भी कहते हैं।

पुष्टि श्राद्ध: शारीरिक या आर्थिक उन्नति के लिए जो श्राद्ध किया जाता हैं उसे पुष्टि श्राद्ध कहते हैं। इसे पुष्टयर्थ श्राद्ध भी कहते हैं।

उपरोक्त वर्णित सभी प्रकार के श्राद्ध श्रौत और स्मार्त दो प्रकार के माने जाते हैं। पिण्ड पितृयाग को श्रौत श्राद्ध कहा जाता हैं, तथा एकोद्दिष्ट एवं पार्वण, तीर्थ श्राद्ध से मरण तक के सभी श्राद्ध को स्मार्त श्राद्ध कहा जाता है।

विद्वानों के मतानुसार पिण्ड पितृयाग केवल अमावस्याके दिन किया जाता हैं, और इसे विशेष ब्राह्मण वर्ग द्वारा ही किया जाता हैं।

काम्य श्राद्ध के विभिन्न लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

साप्ताहिक वार, तिथि एवं नक्षत्रों में काम्य श्राद्ध के फल विभिन्न लाभ का वर्णन शास्त्रों में वर्णित है।

सात वार के अनुसार काम्य श्राद्ध फल

- **सोमवार** को श्राद्ध सौभाग्य की वृद्धि के लिए करना चाहिए।
- **मंगलवार** को श्राद्ध विजय की प्राप्ति के लिए करना चाहिए।
- **बुधवार** को श्राद्ध सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करना चाहिए।
- **गुरुवार** को श्राद्ध विद्या प्राप्ति के लिए करना चाहिए।
- **शुक्रवार** को श्राद्ध धन प्राप्ति के लिए करना चाहिए।
- **शनिवार** को श्राद्ध आयु वृद्धी के लिए करना चाहिए।
- **रविवार** को श्राद्ध आरोग्य के लिए करना चाहिए।

तिथि के अनुसार काम्य श्राद्ध फल

- इच्छाओं की पूर्ति के लिए **शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा** के दिन श्राद्ध करना चाहिए।
- उत्तम पुत्र संतान एवं पशु की प्राप्ति हेतु **कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को** श्राद्ध करना चाहिए।
- उत्तम कन्या संतान की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की द्वितीया को** श्राद्ध करना चाहिए।
- सामाजिक मान-सम्मान की प्राप्ति एवं वृद्धि के लिए **कृष्ण पक्ष की तृतीया को** श्राद्ध करना चाहिए।
- नाना प्रकार के पशुओं की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- सुंदर संतान की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की पंचमी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- तेजस्वी संतान की प्राप्ति एवं द्यूत-क्रीड़ा में विजय प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की षष्ठी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- उपजाऊ भूमि की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की सप्तमी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- व्यापार में वृद्धि एवं लाभ प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की अष्टमी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- उत्तम वाहन अथावा घोडे, ऊँट आदि सवारी में प्रयुक्त होने वाले पशु की प्राप्ति हेतु **कृष्ण पक्ष की नवमी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- उत्तम गौधन या दो खुरवाले पशु की प्राप्ति हेतु **कृष्ण पक्ष की दशमी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- श्रेष्ठ बर्तन, श्रेष्ठ वस्त्र एवं सर्व श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति हेतु **कृष्ण पक्ष की एकदशी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- बहुमूल्य धातु जैसे सोने, चांदी आदि की प्राप्ति हेतु **कृष्ण पक्ष की द्वादशी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- स्वजनों से मान-सम्मान की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- उत्तम लोगों की प्राप्ति के लिए **कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को** श्राद्ध करना चाहिए।
- सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति के लिए **कृष्ण**
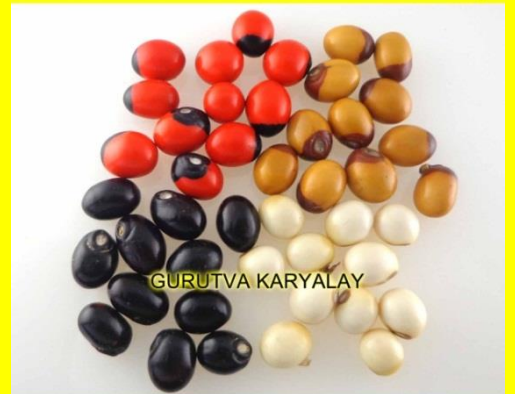
पक्ष की अमावस्या के दिन श्राद्ध करना चाहिए।

भीष्माष्टमी श्राद्ध

निःसंतान हो या बार-बार गर्भ का गिरना या गर्भ में संतान की मृत्यु हो रही हो, तो संतान प्राप्ति के लिए माघ शुक्ल पक्ष की अष्टमी अर्थात भीष्माष्टमी को भीष्म पितामह के नाम से श्राद्ध कर्म या तर्पण करना चाहिए।

नक्षत्र के अनुसार काम्य श्राद्ध फल

- अश्विनी नक्षत्र में श्राद्ध करना घोड़े की प्राप्ति में सहायक होता है।
- भरणी नक्षत्र में श्राद्ध करने से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।
- कृत्तिका नक्षत्र में श्राद्ध करने से पुत्र संतान एवं स्वयं की स्वर्गगति होती है।
- रोहिणी नक्षत्र में श्राद्ध करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।
- मृगशिरा नक्षत्र में श्राद्ध करने से उच्च कोटि के ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- आद्रा नक्षत्र में श्राद्ध करने से रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है।
- पुनर्वसु नक्षत्र में श्राद्ध करने से भूमि की प्राप्ति की प्राप्ति होती है।
- पुष्य नक्षत्र में श्राद्ध करने से शरीर की पुष्टि होती है।
- आश्लेषा नक्षत्र में श्राद्ध करने से लक्ष्मी की प्राप्ति की प्राप्ति होती है।
- मघा नक्षत्र में श्राद्ध करने से प्रियजनो से मान-सम्मन की प्राप्ति होती है।
- पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में श्राद्ध करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है।
- उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में श्राद्ध करने से सुख, सौभाग्य एवं संतान की वृद्धि होती है।
- हस्त नक्षत्र में श्राद्ध करने से सभी प्रकार से पाप का नाश होता हैं एवं कामनाओं की पूर्ति होती है।
- चित्रा नक्षत्र में श्राद्ध करने से रूपवान संतान की प्राप्ति होती है।
- स्वाति नक्षत्र में श्राद्ध करने से व्यापार एवं यश में वृद्धि होती है।
- विशाखा नक्षत्र में श्राद्ध करने से संतान वृद्धि होती है।
- अनुराधा नक्षत्र में श्राद्ध करने से उच्च पद की प्राप्ति एवं बंधुओं से लाभ की प्राप्ति होती है।
- ज्येष्ठा नक्षत्र में श्राद्ध करने से सभी प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।
- मूल नक्षत्र में श्राद्ध करने से आरोग्य की प्राप्ति होती है।
- पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में श्राद्ध करने से व्यक्ति का यश एवं कीर्ति चारों तरफ फैलती है।
- उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में श्राद्ध करने से सभी प्रकार के शोक दूर होते है।
- श्रवण नक्षत्र में श्राद्ध करने से आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- धनिष्ठा नक्षत्र में श्राद्ध करने से राजा के समान सुख-साधनों की प्राप्ति होती है।
- शतभिषा नक्षत्र में श्राद्ध करने से चिकित्सा के से जुडे कार्यों में सफलता प्राप्ति होती है।
- पूर्वभाद्रपद नक्षत्र में श्राद्ध करने से नाना प्रकार के पशुओं की प्राप्ति होती है।
- उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में श्राद्ध करने से गौधन की वृद्धि होती है।
- रेवती नक्षत्र में श्राद्ध करने से विभिन्न प्रकार की धातुओं की प्राप्ति होती है।

श्राद्ध कर्म का अर्थ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रद्धार्थमिदं श्राद्धम्

अर्थात: जो श्रद्धा से किया जाये वह श्राद्ध है।

श्रद्धया पितृन् उद्दिश्य विधिना क्रियते यत्कर्म तत् श्राद्धम्।

अर्थात: पितरों के लिये विधि-विधान से जो कर्म श्रद्धा पूर्वक किये जाते है उसे श्राद्धकर्म कहते हैं।

इस के पीछे का उद्देश्य पितरों के निमित्त, उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक जो कुछ अर्पित किया जाता हैं वह ही श्राद्ध कर्म हैं। श्राद्धकर्म को पितृयज्ञ भी कहते हैं।

श्राद्धकर्म का वर्णन मनुस्मृति, श्राद्धकल्पलता, श्राद्धतत्त्व, पितृदयिता आदि अनेक धर्म-शास्त्रों, पुराणों तथा ग्रन्थोंमें प्राप्त होता है।

महर्षि पराशर के अनुसार

देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च यत्।
तिलैर्दर्भैश्च मन्त्रैश्च श्राद्धं स्याच्छ्रद्धया युतम्॥

अर्थात: देश, काल तथा पात्रमें हविष्या इत्यादि से विधिद्वारा जो कर्म तिल और दर्भ (कुश) एवं मन्त्रों के सहित श्रद्धापूर्वक किया जाए वही श्राद्ध है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार

देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहृतम्॥

अर्थात: देश, काल और पात्रमें विधिपूर्वक श्रद्धासे पितरोंके निमित्त जो ब्राह्मणको दिया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं।

विद्वानों के मत से

संस्कृतं व्यञ्जनाद्यं च पयोमधघतान्वितम।
श्रद्धया दीयते यस्माच्छाद्धं तेन निगद्यते॥

अर्थात: जिस कर्म में दुग्ध, घृत और मधु से युक्त अच्छी प्रकारसे पकाये हुए उत्तम व्यंजनको श्रद्धापूर्वक पितृगणके उद्देश्यसे ब्राह्मण आदि को दिया जाय उसे श्राद्ध कहते हैं।

कात्यायन स्मृति के अनुसार

श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात्।

अर्थात: पितृयज्ञ का दूसरा नाम श्राद्ध हैं।

श्राद्ध कर्म से लाभ की प्राप्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हेमाद्रि और कूर्मपुराण के अनुसार

योऽनेन विधिना श्राद्धं कुर्याद् वै शान्तमानसः।
व्यपेतकल्मषो नित्यं याति नावर्तते पुनः॥

अर्थातः जो शांत चित से विधि-विधान से श्राद्ध करता है, वह व्यक्ति सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर जन्म-मृत्यु के बंधनों से छूट कर फिर संसार-चक्रमें नहीं आता।

विधि-विधान से श्राद्ध कर्म करने से पितरों की सन्तुष्टि तथा स्वयं का कल्याण होता हैं।
विद्वानों का मत से श्राद्ध एक श्रेष्ठ कर्म हैं। नियम से श्राद्ध कर्म करने से पितृगण सन्तुष्ट होने से व्यक्तिको आरोग्य की प्राप्ति, आयु वृद्धी, सौभाग्य वृद्धि, इच्छाओं की पूर्ति, कार्य में सफलता, ज्ञान की प्राप्ति, भूमि-वाहन, धन लाभ तथा संतान लाभ, मान-सम्मान आदि अनेक प्रकार के लाभ की प्राप्ति होती हैं तथा मृत्यु के बाद व्यक्ति का मोक्ष अथवा परलोक में कल्याण अथवा एवं अन्य प्राणि की योनि में भी कल्याण तथा सुख की प्राप्ति होती हैं।

अत्रिसंहिता के अनुसार

पुत्रो वा भ्रातरो वापि दौहित्रः पौत्रकस्तथा।
पितृकार्ये प्रसक्ता ये ते यान्ति परमां गतिम्॥

अर्थातः पुत्र, भ्राता, पौत्र अथवा दौहित्र (नाती) आदि पितृकार्य करते हैं, वे निश्चय ही परम गति को प्राप्त होते हैं।

विद्वानों का कथन हैं कि जो व्यक्ति श्राद्ध करता है, जो व्यक्ति श्राद्धकर्म के विधि-विधानको जानता है, जो व्यक्ति श्राद्धकर्म करनेकी सलाह देता है, जो व्यक्ति श्राद्ध का अनुमोदन करता है इन सब को श्राद्ध का पुण्य फल प्राप्त होता हैं।

पितरों का श्राद्ध कर्म नहीं करने से क्यां होता है?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म शास्त्रों में श्राद्ध कर्म नहीं करने पर जीवात्मा को होने वाली हानि का वर्णन भी मिलता है।
हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार मृत्यु के बाद में मृतक के स्वजन श्राद्ध कर्म के विधि-विधान से जो वस्तुएं प्रदान हैं, वही वस्तुएं उसे प्राप्त होती है।

इसी लिए हमारे शास्त्रों में मरणोपरान्त मृतक की सद्गति एवं उसके स्वजनों के कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार के पिण्डदान की व्यवस्था बतायी गई है। जिस में देवताओंकी प्रसन्नता से लेकर भूत-पिशाच आदि शक्तियों द्वारा होने वाली समस्याओं को दूर करने की विधिया समाहित होती हैं। क्योंकि पिण्डों के माध्यम से ही जीवको आतिवाहिक सूक्ष्म शरीर की प्राप्ति होती है, तथा उस सूक्ष्म शरीर को अपनी आगे की यात्रा में पाथेय (अर्थात वह खाद्य पदार्थ जो यात्रा के समय यात्री रास्ते में खाने-पीने के लिए लेकर जाते हैं।) की आवश्यकता पड़ती है, जो उसे पिण्डदान से प्राप्त हो जाता है।

लोकान्तरेषु ये तोयं लभन्ते नान्नमेव च।
दत्तं न वंशजैर्येषां ते व्यथां यान्ति दारुणाम्॥

अर्थात: यदि सगे-संबंधी, पुत्र-पौत्रादि न दें तो भूख-प्यास से उन्हें वहाँ बहुत भयानक दुःख मिलता है।

शास्त्रों में श्राद्धकर्म नहीं करने वालें व्यक्ति को प्राप्त होने वाले फलों का वर्णन भी मिलता है।

जो अपने पितरों का श्राद्ध नहीं करने से व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के कष्टों को भोगना पड़ता है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार

श्राद्धं न कुरुते मोहात् तस्य रक्तं पिबन्ति ते।

अर्थात: मृतजीव बाध्य होकर श्राद्ध नहीं करने वाले अपने सगे-सम्बन्धियों का रक्त चूसने लगते हैं।

श्राद्धकर्म नहीं करने पितरों का शाप लगता है

पितरस्तस्य शापं दत्त्वा प्रयान्ति च।

अर्थात: श्राद्धकर्म नहीं करने पितरों का शापित करते है।

जिस कारण परिजनों को जीवन भर विभिन्न प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते है। परिवार में संतान का अभाव होता हैं, परिजनों को विभिन्न रोग होते हैं, अल्पायु को प्राप्त होते है। परिवार में सभी तरह से अमंगल होता हैं। एवं मृत्यु के उपरांत नरक की प्राप्ति होती हैं।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्

अर्थात: देवता तथा पितरोंके कार्योंमें व्यक्तिको कभी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

इसलिए श्राद्धकर्म को पूर्ण विधि एवं पूर्ण श्रद्धा से ही पूर्ण करें।

पितरों को श्राद्ध कर्म से तृप्ति कैसे होती है ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सामान्यतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है, कि श्राद्धकर्म में जो अन्न तथा अन्य सामग्रियाँ दी जाती हैं वह पितरों को कैसे प्राप्त होती हैं।

क्योकि मृत्यु के बाद जीवको अपने शुभ-अशुभ कर्मोंके अनुसार आगे की गति प्राप्त होती है। शास्त्रोंके अनुसार स्वर्ग-नरक के फल भोगने के बाद जीव अपने कर्मों के अनुसार पुनः 84 लाख योनियों में भ्रमण करने लगता है। मृत्यु के बाद पुण्यात्माएं पुनः मनुष्य योनि अथवा देव योनि को प्राप्त कर लेते हैं तथा पापात्माएं अन्य प्राणियों की योनि में जन्म ग्रहण करते हैं, जिसमें कोई जीव का स्वरुप विराट होता हैं तो कोई जीव का स्वरुप सूक्ष्म होता हैं, इस लिए श्राद्ध में दिया गया छोटा सा पिण्डदान विभिन्न स्वरुप वाले जीव को यह किस प्रकार प्राप्त होता है। तथा देवताओं की तृप्ति भी इस पिण्डदान से कैसे होती हैं।

हिन्दू शास्त्रों एवं ग्रंथों में इस सबका वर्णन भी प्राप्त होता है।

शास्त्रों में उल्लेखित हैं की नाम तथा गोत्र के माध्यम से विश्वेदेव तथा अग्निदेव इत्यादि पितरों के निमित्त दीगई हव्यको पितरों तक पहुंचा देते हैं।

यदि पितर देव योनि को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड अमृत रूपमें प्राप्त हो जाता है तथा यदि मनुष्य योनि को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड अन्न के रूपमें प्राप्त हो जाता है तथा यदि पितर अन्य प्राणियों की योनि को को प्राप्त हुवे हो तो उन्हें दिया गया पिण्ड उस प्राणि के भोजन के अनुरुप प्राप्त हो जाता है और जीव को तृप्त करती है।

यथा गोष्ठे प्रणष्टां वै वत्सो विन्देत मातरम्।
तथा तं नयते मन्त्रो जन्तुर्यत्रावतिष्ठते॥
नाम गोत्रं च मन्त्रश्च दत्तमन्नं नयन्ति तम्।
अपि योनिशतं प्राप्तांस्तृप्तिस्ताननुगच्छति॥

अर्थात: जिस प्रकार किसी गोशाला में अनेक गायों के बिछड़ गया बछड़ा किसी न किसी प्रकार से अपनी माँ को ढूंढ ही लेता है, उसी प्रकार मन्त्र भी वस्तुओं को प्राणी के पास किसी न किसी रुपमें पहुँचा ही देता है। नाम, गोत्र, हृदय की श्रद्धा तथा आवश्यक संकल्प से दिये गए सभी पदार्थों को श्रद्धा पूर्वक किया गया मन्त्र पाठ उसके पास पहुँचा देता है।

जीव सैकड़ों योनियों को पार कर लेने पर भी, जब पिण्ड दान किया जाता हैं तो उसेके पास तृप्ति किसी न किसी प्रकार से पहुँच ही जाती है।

श्राद्ध कर्म में ब्राह्मण भोजन की महिमा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रों में मुख्य रुप से श्राद्धकर्म की दो पद्धतियों का वर्णन किया गया हैं। पिण्डदान एवं ब्राह्मण भोजन।
शास्त्र के अनुसार मृत्यु के बाद जो अन्तरिक्ष में सूक्ष्मग्राही जीवआत्मा वायवीय शरीर धारण किये होती है।
सूक्ष्मग्राही शरीरधारी तथा जल, अग्नि तथा वायुप्रधान होने के कारण उन्हें कहीं पर भी आने-जाने में कोई समस्या नहीं होती।
विशेष मन्त्रों के द्वारा जब उन्हें बुलाया जाता हैं, तब पितर मनकी गतिकी तरह स्मरण मात्रसे ही श्राद्ध के स्थान पर उपस्थित हो जाते हैं और आमंत्रित किये गये ब्राह्मणों के माध्यम से भोजन ग्रहण कर तृप्त हो जाते हैं।

अथर्ववेद के अनुसार

इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम्।

अर्थात: ब्राह्मणों को भोजन कराने से वह भोजन पितरों को प्राप्त हो जाता है।

मनुस्मृति के अनुसार

यस्यास्येन सदाश्नन्ति हव्यानि त्रिदिवौकसः।
कव्यानि चैव पितरः किं भूतमधिकं ततः॥

अर्थात: ब्राह्मण के मुख के द्वारा देवता लोग हव्य भागों को और पितर लोग कव्यभागों को सदा खाया करते हैं।

तथा श्राद्ध के लिए आमंत्रित किये गये ब्राह्मणों में पितर गुप्त रूप से निवास करते हैं और उन ब्राह्मणों के साथ ही बैठ कर भोजन ग्रहण करते हैं।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार

तिर इव वै पितरो मनुष्येभ्य

अर्थात: सूक्ष्म शरीरधारी अथवा सूक्ष्मग्राही वायवीय शरीर होने के कारण पितर मनुष्यों से छिपे हुए से होते हैं।
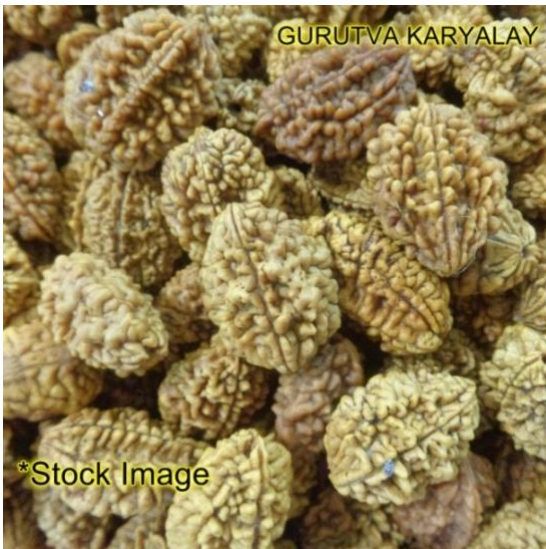
धन के अभाव में श्राद्ध कैसे करें ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रों में श्राद्ध कर्म के लिए यदि पर्याप्त धन न हो तो श्राद्ध कर्म किस प्रकार करने से लाभ होता हैं उसके उपाय बताएं गये है।

यदि श्राद्ध कर्म करना अति आवश्यक हो एवं किसी कारण वश धन की कमी हो !

तस्माच्छ्राद्धं नरो भक्त्या शाकैरपि यथाविधि।

अर्थात: यदि अन्न-वस्त्र आदि खरीदने के लिए धन का अभाव हो तो उस परिस्थिति में शाक से श्राद्ध करना चाहिये।

- यदि शाक खरीदने के लिये भी धन न हों तो घास या काष्ठ आदिको बेचकर उस धन से शाक खरीद कर श्राद्ध करे।
- किसी कारण से यदि उक्त दोनों विधि करने में असमर्थ हो तो केवल घाससे श्राद्ध किया जा सकता है। घास को काट कर पितरों के नाम पर गाय को खिला दे।
- किसी कारण से यदि उक्त तीनों विधि करने में असमर्थ हो तो किसी एकान्त स्थानमें जाकर। शांत एवं एकाग्र चित्त से अपनी दोनों भुजाओंको ऊपर की ओर उठाकर इस श्लोक से पितरों को प्रार्थना करे

न मेऽस्ति वित्तं न धनं च नान्यच्छ्राद्धोपयोग्यं स्वपितॄन्नतोऽस्मि।
तृप्यन्तु भक्त्या पितरो मयैतौ कृतौ भुजौ वर्त्मनि मारुतस्य॥

(विष्णुपुराण)

अर्थात: हे मेरे पितृगण... ! मेरे पास श्राद्ध के लिए उपयुक्त न तो धन है, न धान्य आदि है। लेकिन हाँ मेरे पास आपके लिए श्रद्धा और भक्ति है। मैं इन्हीं के द्वारा आपको तृप्त करना चाहता हूं। आप तृप्त हों जाये। मैंने शास्त्र के निर्देश अनुसार आपनी दोनों भुजाओं को आकाश में उठा रखा है।

इस विधि से भी श्राद्धकर्म को संपन्न किया जा सकता हैं।

लेकिन सभी धन-साधनों से सम्पन्न व्यक्ति को श्राद्धकर्म करने में कंजूसी नहीं करनी चाहिये, वरन उन्हें तो यथा संभव साधनोंसे पूर्ण श्रद्धाभाव से श्राद्धकर्म अवश्य करना चाहिये।

इसलिए शास्त्रोंक्त मत से संपन्न हो या गरीब अपने सामर्थ्य के अनुसार श्राद्धकर्म सभी को अवश्य करना चाहिए।

शास्त्रोंक्त मतसे श्राद्ध करने का अधिकार

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रों में उल्लेख है की पिता का श्राद्ध करनेका अधिकार मुख्य रूपसे पुत्रको ही होता है। एकाधिक पुत्र हो तो सभी क्रियाएँ बड़े पुत्रको करनी चाहिये। किसी कारण से यह संभव न हो तो भाई की अनुमति से भाई भी कर सकता है। यदी सभी भाई साथ में रहते हो तो वार्षिक श्राद्ध बड़े पुत्र के द्वारा सम्पन्न हो सकता है। यदि सभी पुत्र अलग-अलग रहते हों, तो वार्षिक श्राद्ध सभी को अलग-अलग करना चाहिये।

श्राद्धकल्पलता के अनुसार

श्राद्ध करने का अधिकार मुख्य रुप से पुत्र को ही दिया गया हैं लेकिन तथा के अलावा यह अधिकार अधिकार पौत्र, प्रपौत्र, दौहित्र (पुत्रीका पुत्र अर्थात नाती), पत्नी, भाई, भतीजा, पिता, माता, पुत्रवधू, बहन, भानजा, सपिण्ड (अर्थात मृतक से लेकर पूर्व की सात पीढ़ी तक का परिवार) तथा सोदकर (अर्थात आठवीं पीढ़ी से लेकर चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों का परिवार) को होता हैं।

विष्णुपुराण के अनुसार करने का धिकार पुत्र के अलावा पौत्र, प्रपौत्र, भाई, भतीजा तथा अपनी सपिण्ड की संततिमें उत्पन्न हुआ पुरुष ही श्राद्धा आदि को ही होता है। यदि इन सबका अभाव हो तो समानोदकको (जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज की) संतति अथवा मातृपक्ष के सपिण्ड अथवा समानोदक को इसका अधिकार है। मातृकुल और पितृकुल दोनों के नष्ट हो जाने पर स्त्री ही इस क्रिया को करे अथवा (यदि स्त्री भी न हो तो) मित्रों में से ही कोई करे या मित्रों भी न हो तो मृतक के धनसे राजा (सरकारी अधिकारी) उसके सभी कर्म करवाये।

हेमाद्रि के अनुसार

पिता की सभी क्रिया पुत्र को ही करनी चाहिये। पुत्र न हो तो पत्नी करे और पत्नी के अभाव में सहोदर भाई को करनी चाहिये।

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार

राजा (सरकारी अधिकारी) सभी वर्गों का बन्धु होता है। इस लिए सभी श्राद्ध के अधिकारी जनोंके अभाव होने पर राजा मृत व्यक्ति के धन से उसके बंधुओं द्वारा सभी क्रिया करवाये।

मृत्युतिथि तथा पितृपक्षमें श्राद्ध का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज के आधुनिक युग में उचित जानकारी के अभाव में या समय के अभाव में या अत्याधुनिकीकरण के चलते श्राद्ध इत्यादि कर्मों को अधिक महत्व नहीं देते हैं तथा कुछ लोग बगैर श्रद्धा-भाव से केवल इसे रीति-रिवाज मानकर श्राद्ध करते हैं। लेकिन आज के आधुनिक युग में भी कुछ लोग हैं जो यथाविधि नियम के अनुसार श्रद्धकर्म करते हैं।

शास्त्रोक्त विधि से संपन्न किया गया श्राद्धकर्म ही सभी प्रकार से कल्याणदायक होता है। इसलिए व्यक्तिको श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त मत के समस्त अथवा यथासंभव विशेष अवसरो पर श्राद्ध करते रहना चाहिये। जो व्यक्ति शास्त्रोक्त मत के समस्त श्राद्धकर्मों को करने में असमर्थ हो उन्हें क्षय तिथि पर, वार्षिक तिथि पर एवं पितृपक्ष में अपने मृत पितृगण की मरण तिथि के दिन श्राद्धकर्म अवश्य करना चाहिए।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पूर्णिमासे पितरोंका दिन प्रारम्भ हो जाता हैं, जो आश्विन कृष्ण पक्ष की अमावास्या तक रहता है।

हमारे एक मास के बराबर पितरों का एक अहोरात्र (अर्थात दिन-रात) होता है। मनुस्मृति के अनुसार जिस प्रकार मासमें दो पक्ष होते है, मनुष्यों का कृष्ण पक्ष पितरों के कर्म का दिन और शुक्ल पक्ष पितरों के सोने की रात होती है।

इसलिए आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में अर्थात पितृपक्ष में पितृ के निमित्त श्राद्धकर्म करने का विधान है। इसी पक्ष में किये गये श्राद्ध कर्म से पितरोंको भोजन प्राप्त होता है।

श्राद्ध के मुख्य दो अवसरों का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रो में वर्णित हैं की व्यक्ति के लिए वर्ष में कम से कम दो बार श्राद्ध करना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त विशेष अवसरों पर श्राद्ध करनेकी विधि बतायी गई है।

क्षय तिथि (मृत्यु कि तिथि):

जिस दिन व्यक्ति की मृत्यु होती है, उस तिथि के दिन वार्षिक श्राद्ध करना चाहिये। शास्त्रों में क्षय तिथि पर **एकोद्दिष्ट श्राद्ध** करने का विधान बताया गया हैं। इसी को कुछ लोग पार्वण श्राद्ध भी कहते हैं, क्योंकि यह विशेष तिथि पर किया जाता है)।

साधारणतः **एकोद्दिष्ट श्राद्ध** केवल मृत व्यक्ति के निमित्त एक पिण्ड का दान करके तथा कम से कम एक ब्राह्मण को और अधिक तम तीन ब्राह्मणों को भोजन कराया जाय।

पितृपक्ष:

शास्त्रों में पितृ पक्ष में मृत व्यक्ति की जो मृत्यु तिथि होती हैं, उस तिथि पर विशेष रुप से पार्वण श्राद्ध करनेका विधान बताया गया हैं। यथा सम्भव पिता की मृत्यु तिथि पर श्राद्धकर्म अवश्य करना चाहिये। पार्वण श्राद्ध में पिता, दादा, परदादा, माता, दादी और परदादी तीन चट में इन छः व्यक्तियों का श्राद्ध किया जाता है।

इसके साथ ही नाना, परनाना, वृद्ध परनाना, नानी, परनानी वृद्ध परनानी तीन चट में इन छः व्यक्तियों का भी श्राद्ध किया जाता है। इसके अलावा एक चट और लगाया जाता है, जिस में अपने निकटतम सम्बन्धियोंके निमित्त पिण्डदान किया जाता है। इसके अलावा दो चट विश्वेदेव के लिये लगाए जाता है, इस तर कुल नौ चट लगाकर पार्वण श्राद्ध को सम्पन्न किया जाता है। तथा इस में नौ ब्राह्मणों को भोजन कराने का विधान है। और कम से कम तीन ब्राह्मणों को भोजन कराया जा सकता है। यदि योग्य ब्राह्मण की उपलब्धता न हो तो कम से कम एक सात्त्विक ब्राह्मण को भोजन अवश्य कराए।

ब्राह्मण भोजन का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्र एवं पुराणों के अनुसर जो श्रद्धा से दिया जाये उसे श्राद्ध कहते हैं।

ब्रह्मपुराण के अनुसार

देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहृतम्॥

अर्थात: देश, काल और पात्रमें विधिपूर्वक श्रद्धासे पितरोंके निमित्त जो ब्राह्मणको दिया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं।

विद्वानों के मत से

संस्कृतं व्यञ्जनाद्यं च पयोमधघतान्वितम।
श्रद्धया दीयते यस्माच्छाद्धं तेन निगद्यते॥

अर्थात: जिस कर्म में दुग्ध, घृत और मधु से युक्त अच्छी प्रकारसे पकाये हुए उत्तम व्यंजनको श्रद्धापूर्वक पितृगणके उद्देश्यसे ब्राह्मण आदि को दिया जाय उसे श्राद्ध कहते हैं।

भोजन हेतु केवल श्रेष्ठ तथा उत्तम ब्राह्मणों को हि निमंत्रण देना चाहिए।

- पवित्र भाव से पितरों को गंध, पुष्प, धूप, घृत, आहुति, फल, मूल आदि अर्पित करके नमस्कार करना चाहिए।
- पितरों को प्रथम तृप्त करना चाहिए। सर्वप्रथम ब्राह्मणों के आगमन पर चरण धोने चाहिए। उसके बाद अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्न-संपत्ति से ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए। फिर उन्हें स्वच्छ आसनों पर बैठाकर श्राद्धाभाव पूर्वक भोजन कराना चाहिए।
- यदि भाग्यवश श्राद्ध के दिन कोई साधु, तपस्वी, ब्राह्मण, सन्यासी अथवा अतिथि बिना निमंत्रण के घर आजाये तो उन्हें भी भोजन कराना चाहिए।
- देवताओं तथा पितरों दोनों के निमित्त कम से कम एक-एक ब्राह्मण को भोजन कराने का विधान शास्त्रों में वर्णित है।
- पितरों के निमित्त विषम अर्थात 1, 3, 5, 7 इत्यादि की संख्या में ब्राह्मणों को भोजन कराने की व्यवस्था करनी चाहिए।
- देवताओं के निमित्त सम अर्थात 2,4,6,8 इत्यादि की संख्या में ब्राह्मणों को भोजन कराने की व्यवस्था करनी चाहिए।
- विशेष दान, अन्न, भक्ष्य, पेय, वस्त्र, गौ, अश्व तथा भूमि इत्यादि का दान देकर उत्तम ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिए। द्विजों के पूजन एवं सत्कार से पितर प्रसन्न हो जाते हैं।

वायु पुराण के अनुसार

श्राद्ध के निमित्त हजारों ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल एक योग में निपुण ब्राह्मण संतुष्ट होने पर दे देता हैं और पितरों को नरक से छुटकारा दिला देता है।

यदि श्राद्ध के अवसर पर कोई योग में निपुण, ध्यानी अथवा उत्तम पात्र न मिले तो दो कम से कम ब्रह्मचारियों को भोजन कराना चाहिए। यदि वे भी न मिलें तो किसी गरीब ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।

शास्त्रोंक्त मत से

श्राद्ध के अवसर पर मित्रघाती, स्वभाव से ही विकृत, कन्यागामी, आग लगाने वाला, शराब आदि मादक द्रव्य बेचने वाला, समाज में निंदित, चोर, चुगल खोर, पुनर्विवाहिता स्त्री का पति, माता-पिता का

परित्याग करने वाला, रोग से ग्रस्त, खराब संतान का पालन-पोषण करने वाला, जिस परिवार में बच्चों का सूतक हो, नीचकर्म करनेवाली स्त्री का पति, नीति के विरुद्ध कर्म करने वाले, मलिन तथा पतित विचारों वाले लोगों को भोजन हेतु निमंत्रण नहीं देना चाहिए।

भोजन की व्यवस्था से पूर्व यह सुनिश्चित करले की सभी वयवस्थाएं भोजनकर्ता की इच्छा के अनुसार है। फिर सभी पात्रों में भोजन रखकर विनम्रभाव से अनुरोध करें की अब आप सब लोग अपनी इच्छा के अनुसार भोजन ग्रहण करें। फिर शांति पूर्वक उनकी रुचि अनुसार अभोजन परोसते रहना चाहिए। ब्राह्मणों को भी रुचिपूर्वक मौन रहकर प्रसन्नता से भोजन करना चाहिए। भोजन में सात्विक भोजन ही प्रयुक्त होता हैं अतः विद्वानों से परामर्श कर भोजन की व्यवस्थाएं करे। तथा जूठे बचे हुए अन्नादि पदार्थ किसी को नहीं देना चाहिए।

***

श्राद्ध के निमित्त दान का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्राद्ध का दान देते समय कुछ सावधानियां बरतने का विधान शास्त्रों में वर्णित हैं।

दान देते समय अपने हाथ में काले तिल, जौ और कुश के साथ पानी लेकर ब्राह्मण को दान देना चाहिए, जिससे उसका शुभ फल पितरों तक पहुँच सके, अन्यथा इसका हिस्सा असुर ले जाते हैं।

दान देते समय ब्राह्मण के हाथ में अक्षत देकर यह मंत्र का उच्चारण किया जाता है।

अक्षतं चास्तु में पुण्यं शांति पुष्टिर्धृतिश्च मे।
यदिच्छ्रेयस् कर्मलोके तदस्तु सदा मम।।

अर्थातः मेरा पुण्य अक्षय हो। मुझे शांति, पुष्टि और धृति प्राप्त हो। लोक में जो कल्याणकारी वस्तुएँ हैं, वह सदा मुझे प्राप्त होती रहें।

पितरों को केवल श्रद्धा से ही बुलाकर तृप्त किया जा सकता है। सिर्फ कर्मकाण्ड या वस्तुओं तृप्त नहीं किया जा सकता है।

श्राद्ध में रजत (चाँदी) का दान उत्तम होता है। चाँदी के अभाव में उसका दर्शन अथवा उसका स्मरण भी पितरों को अनन्त एवं अक्षय स्वर्ग देनेवाला दान माना जाता है।

विद्वानों का कथन हैं की योग्य संतान चाँदी के दान से अपने पितरों को तारते हैं।
सुवर्ण निर्मित, चाँदी निर्मित, ताम्र निर्मित वस्तुएं, तिल, वस्त्र, कुश का तृण, कम्बल, अन्य पवित्र वस्तुएँ।

श्राद्ध में ब्राह्मणों को अन्न देने में असमर्थ हो तो ब्राह्मणों को कंदमूल, फल, शाक एवं यथा शक्ति दक्षिणा दे सकते है।

यदि इतना करने में भी असमर्थ हो तो किसी भी श्रेष्ठ ब्राह्म को प्रणाम करके एक मुट्ठी काले तिल दे सकते है या पितरों के निमित्त भूमि पर श्रद्धा-पूर्वक एवं नम्रता अल्प तिलों से युक्त जलांजलि दे सकते है। यदि इसका भी करने में असमर्थ हो तो किसी भी प्रकार से एक दिन का घास लाकर श्रद्धापूर्वक पितरों के निमित्त से गौ को खिलाये।
अतः धन के अभाव में श्रद्धा पूर्वक जो अर्पण किया जाता हैं पितर उससे वे तृप्त होते हैं।

पितृ शाप के कारण और शान्ति के सरल उपाय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

माता-पिता बच्चों के भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा आदि की पूर्ति के लिए जितना त्याग करते हैं

इस लिए हमारे शास्त्रों में माता-पिता को साक्षात् देवता कहां गया है।

मातृदेवो भव पितृ देवो भवः

लेकिन अधिकतर पुत्र संतान उसे भूल जाते हैं। कई बार देखनें को मिलता हैं की तामसी प्रवृत्ति की पुत्र संतान माता-पिता का उचित आदर-सम्मान नहीं देते माता-पिता को विभिन्न प्रकार की यात्नाएं देते हैं उन्हें अपमानित करते हैं, इस अवस्था में माता-पिता के लाख प्रयत्न के उपरांत भी जब संतान नहीं सुधरती इसी स्थिती में पिता के अंतर्मन में जो पीड़ा एवं तथा कष्ट उत्पन्न होता हैं इसी को विद्वानों ने पितृ शाप कहा है। तथा माता के अंतर्मन में जो पीड़ा एवं तथा कष्ट उत्पन्न होता हैं इसी को विद्वानों ने मातृ शाप कहा है।

ज्योतिष में पितृ शाप

- ज्योतिष में सूर्य को पिता का कारक ग्रह माना है। ज्योतिष के अनुसार कई प्रकार के पितृशाप के योग का निर्माण होता है।
- जन्म कुंडली में यदि सूर्य पंचम भाव में अपनी नीच राशि में शनि के नवमांश में हो और उसके चतुर्थ एवं छठे भाव में पाप ग्रह हो स्थित हो तो पितृश्राप होता हैं एवं संतान की हानि होती है।
- सूर्य पंचम भाव हो, सूर्य से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में पाप ग्रह स्थित हो, त्रिकोण में पाप की ग्रह सूर्य पर दृष्टि हो तो पितृश्राप होता हैं।
- सूर्य पंचमेश हो पाप ग्रह के साथ पंचम या नवम भाव में स्थित हो और सूर्य से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- सिंह राशि में गुरु स्थित हो, पंचमेश सूर्य के साथ युत हो तथा लग्न और पंचम भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो पितृश्राप बनता हैं।
- लग्नेश दुर्बल होकर पंचम भाव में स्थित हो, पंचमेश सूर्य के साथ हो तथा लग्न और पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो पितृश्राप से संतान हानी होती है।
- दशम भाव का स्वामी पंचम भाव में अथवा पंचमेश दशम भाव में हो तथा लग्न और पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- मंगल दशम भाव का स्वामी होकर पंचमेश से युत हो तथा लग्न, पंचम और दशम भाव में पापग्रह हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- लग्न और पंचम भाव में में सूर्य, मंगल, शनि स्थित हों अष्टम और द्वादश भाव में राहु और गुरु हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- दशम भाव का स्वामी षष्ठम, अष्टम और द्वादश भाव में से किसी स्थान में तथा गुरु पाप ग्रह की राशि में स्थित हो तथा
- पंचमेष और लग्नेश पापयुत हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- अष्टम भाव में सूर्य, पंचम भाव में शनि स्थित हो, पंचमेश राहु से युत हो और लग्न पाप ग्रह से युत हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- द्वादशेश लग्न में स्थित हो, अष्टमेश पंचम में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में स्थित हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- षष्ठेश पंचम में दशमेश के साथ में स्थित हो, तथा गुरु राहु से युत हो तो पितृश्राप से संतान की हानी होती है।
- षष्ठेश पंचम में स्थित हो, दशमेश षष्ठ भाव में

लाल किताब से जाने ऋण

संकलन गुरुत्व कार्यालय

लाल किताब के अनुशार पितृ ऋण, मातृ ऋण, स्त्री ऋण, बहन-बेटी का ऋण, निर्दयी ऋण, अज्ञान का ऋण, दैवि ऋण, संबंधि (रिश्तेदारी) का ऋण, स्वऋण आदि ऋण मानव के जीवन में सुख-समृद्धि व उन्नति में बाधक होते हैं। आप सभी के मार्गदर्शन हेतु यहां लालकिताब में उल्लेखित ऋण को विस्तारपूर्वक मझाया जा रहा हैं तथा उनके उपाय भी दिये जा रहे हैं।

हमारे अधिकतर धर्मशास्त्रो में उल्लेख हैं की "आपको जो फल प्राप्त होता हैं वह केवल आपके संचित कर्मो का फल होता हैं।"

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।

(श्रीमद् भगवत गीता)

अर्थात: बिना फल की अपेक्षा किए कर्म करते रहो।

लेकिन लाल किताब के अनुशार:

"आपको जो फल प्राप्त होता हैं वह केवल आपके कर्मो का फल नहीं होता, बल्कि आपको अपने पूर्वजों के कर्मो के फल भी भोगने पडता हैं।"

लाल किताब और ऋण

पितृ ऋण:

शास्त्रोक्त व आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुशार हमारे पूर्वजों अर्थात पितरों का क्रियाकर्म आदि विधिवत पूर्ण नहीं होने पर पूर्वजों से हमें परेशानीयां होती हैं। इसे लालकिताब में पितृ ऋण की सज्ञा दी गई हैं।

लाल किताब में पितृ ऋण का सबसे बडा सिद्धांत हैं **"करे कोई, भरे कोई"**

अर्थात: पूर्वजों की गलती का परिणाम पुत्र को भोगना पडता हैं। ऐसा उस अवस्था में होता है जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में कोई दुष्कर्म करता है, किसी को हानि पंहुचाता है या कोई पापकर्म करता है तो उसके वंश में किसी जातक को उसके किए गए कुकर्मो का दुष्फल भोगना पड़ता है, ऐसी अवस्था को ही पितृऋण कहां जाता हैं।

विद्वानो के मत से राजा दशरथ ने अनजाने में श्रवण कुमार को तीर मार जिससे श्रवण कुमार की मृत्यु से दुखी होकर उसके माता-पिता ने राजा दशरथ को यह शाप दिया **"जैसे हम पुत्र वियोग में मर रहे हैं उसी**

प्रकार आप भी पुत्र वियोग के कारण मृत्यु को प्राप्त करेंगे।"

राजा दशरथ पुत्र वियोग में मृत्यु को प्राप्त हुवे। श्रवण कुमार को तीर से मारना राजा दशरथ का कर्म था। परंतु राम का कोई अपराध न होने पर भी उन्हें पिता की गलती के कारण 14 साल का वनवास भोगना पडा।

महर्षि वाल्मिकी ने चिडिमार को शाप दिया:

"मा निषाद! प्रतिष्ठाम् त्वम गमः शाश्वती समा।"

उसी काल से अब तक हजारो लाखो चिडिमार हुवे होंगे लेकिन् महर्षि के शाप के कारण किसी को भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई। इन बातो से अनुमान लगाया जा सकता हैं की पूर्वजों के दुष्कर्मो का फल उनके वंशजों को भोगना पड़ता हैं। इसी को पितृ ऋण कहते हैं...

पितृ ऋण की पहचान:

- यदि मकान के पड़ोस में किसी धर्म स्थान या पीपल आदि पवित्र पेड़ हो और उसे काटा जाये तो पितृऋण बनता हैं।
- पितृ ऋण की मुख्य पहचान हैं कि इनसे होनेवाले अनिष्ठ से घर के सभी लोग प्रभावित होते हैं। प्रायः देखने में आता हैं की परिवार के किसी एक सदस्य की जन्म कुंडली में जो ग्रह पीडित हो वहीं ग्रह पीडित अवस्था में परिवार के अन्य व्यक्तियों की जन्म कुंडली में भी होते हैं।
- लालकिताब में जो ग्रह अपने घर में, अपने कारक घर में या शत्रु के घर में स्थित हो तो उस ग्रह को पीडित माना जाता हैं।
- पीडित ग्रह जिस रिश्तेदारों के कारक होते हैं उन्हीं रिश्तेदारों का दुष्कर्म या पापकर्म अथवा उन्हें मिलने वाल शाप पितृदोष होता हैं।

ग्रह संकेत:

- यदि किसी जन्म कुंडली में 2, 5, 9, 12, भावो में कोई भी ग्रह हो तो जातक पितृ ऋण से प्रभावित होगा ।
- कुंडली में 2,5,7 में से किसी भी भाव में बुध, शुक्र या राहु हो तो गुरु पीडित हो जाता हैं।
- यदि नवम भाव में गुरू के साथ शुक्र स्थित हो, चतुर्थ भाव में शनि और केतु हों तथा चन्द्रमा दशम भाव में हो तो जातक पितृ ऋण से पीड़ित होता हैं।

बुध और पितृऋण

कुंडली में यदि निम्नानुसार ग्रह स्थिति हो तो पितृऋण होता हैं।

- द्वितीय या सप्तम में बुध और नवम में शुक्र हो ।
- तृतीय में बुध और नवम में राहु हो ।
- चतुर्थ में बुध और नवम में चन्द्रमा हो ।
- पंचम में बुध और नवम में सूर्य हो ।
- षष्ठम में बुध और नवम में केतु हो ।
- दशम या एकादश में बुध और नवम में शनि हो ।
- द्वादश में बुध और नवम में गुरू हो ।

- उपरोक्त ग्रह स्थिति में बुध विरोध करने वाला बन जाता हैं और अन्य ग्रहों का फल बिगाडकर जातक को अनिष्टकारक बनता हैं।
- जो जातक के समस्त पारिवारीक सदस्यो पर प्रभाव पडता हैं। इस लिये बुध का उपाय करना चाहिए।

बृहस्पति और पितृऋण

कुंडली में यदि निम्नानुसार ग्रह स्थिति हो तो पितृऋण होता हैं।

- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और शनि 2 में हो,
- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और शुक्र 5 में हो,
- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और बुध 3 में हो,
- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और राहु 12 में हो,
- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और बुध या शुक्र 3 या 6 में हो,
- बृहस्पति केंद्र स्थान 1,4,7,10 में स्थित हों और शनि 3 या 6 में हो,
- उपरोक्त ग्रह स्थिति में बृहस्पति से पितृऋण के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। इसलिए बृहस्पति उपाय करना चाहिए।

अन्य ग्रहो से पितृऋण

कुंडली में यदि निम्नानुसार ग्रह स्थिति हो तो पितृऋण होता हैं।

- राहु, केतु या शत्रु ग्रह 5 में हो और सूर्य 1 या 11 में न हो,
- बुध, शुक्र, शनि ग्रह 4 में चंद्र के साथ हो।
- बुध या केतु 1 या 8 में हो और मंगल 7 में न हो,
- चंद्र 3 या 6 में हो और बुध 2 या 12 में न हो,
- सूर्य, चंद्र या राहु 2 या 7 में हो और शुक्र 1 या 8 में न हो,
- सूर्य, चंद्र या मंगल 7 या 10 में हो और शनि 3 या 4 में न हो,
- सूर्य, मंगल एवं शुक्र 12 में हो, राहु 6 में न हो और
- चंद्र, मंगल में हो और केतु 2 में न हो,

- उपरोक्त ग्रह स्थिति जन्म कुंडली में होने पर क्रमशः सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु और केतु पीडित होते हैं।
- इसलिए जो ग्रह पीडित हो उसका उपाय करना चाहिए।
- उपरोक्त ग्रह योग के अतिरिक्त जन्म कुंडली में 2, 5, 7, 12, भाव में पीडित होते हैं तो जातक पितृ ऋण से प्रभावित होगा ।

फल:

- समय से पहले ही जातक के बाल सफद हो जाते हैं। जातक को वृद्धावस्था में कष्ट मिलते हैं।
- धन हानि होती है उसी के साथ जातक का दुर्भाग्य शुरु हो जाता हैं।
- जातक का धन खो जाता हैं या चोरी हो जाता हैं।
- घर की बरकत समाप्त होती जाये ।
- चोटी अर्थात शिखा के बाल झडने लगते हैं।
- विद्या प्राप्ति में रुकावटे आती हैं या शिक्षा अधूरी रह जाती हैं।
- जातक को समाज में मान हानि, बनते कार्यो में रूकावट, सुख की जगह दु:ख तथा निराशा प्राप्त होती हो। निर्दोष होने पर भी जेल जाना पडता हैं।

उपाय:

- परिवार या खानदान के हर एक सदस्य से पैसा इकट्ठा करके धर्म स्थान पर दान दें या अपने नजदीकी मंदिर की सेवा में देतो ऐसे अनिष्ट फल का शमन हो जायेगा ।
- पीपल के पेड की देखभाल करें।
- किसी भी कार्य को करने से पूर्व अपनी नाक को साफ करले।
- सिर पर पगड़ी (टोपी) पहने अर्थात बाल खुले न
- रखे सिर ढंक कर रखे या कपाल पर केसर अथवा पीले रंग का तिलक लागाएं।

स्व ऋण

आस्तिकता को त्याग कर जातक का नास्तिक होना और पुराने या पारंपरिक रीति-रिवाजों को न मानना जातक के स्वऋण से पीडित होना दर्शाता हैं। स्वऋण के प्रभाव से जातक जीवन में पहले प्रगति के उच्च शिखर पर पहुंच जाता हैं, जातक स्वयं के बल पर अतुल धन-सम्पत्ति अर्जित करता हैं। मान-सम्मान के कारण प्रसिद्ध-ख्याति मिलती हैं लेकिन समय के साथ-साथ उसका भाग्यचक्र उल्टा घुमने लगता हैं और आकस्मिक घटनाओं के कारण उसकी सारी धन-संपदा खर्च हो जाती हैं या चोरी हो जाता हैं। उसकी मान-प्रतिष्ठा रातो-रात धुमिल हो जाती हैं। यह स्थिति तब उत्पन्न होती हैं जब जातक का पुत्र ग्याराह महीने या ग्याराह साल का होता हैं। लाल गाय या भैंस खो जाती हैं या मर जाती हैं। स्वास्थ संबंधित समस्याएं परेशान करती हैं। शरीर के अंग में अकड्न होना, हिलने-डुलने में कठिनाई महसूस होती हैं। मुहं में हर वक्त थूक आता रहता हैं।

ग्रह संकेत:

- यदि कुंडली में सूर्य पंचम भाव में पापी ग्रह से पीडित हो तो जातक स्व ऋण से पीडित होता है या जन्मकुंडली के पंचम भाव में पापी ग्रहों के होने से स्वऋण होता है।
- जिससे जातक निर्दोष होते हुए भी दोषी माना जाता है। उसे विभिन्न प्रकार का शारीरिक कष्ट मिलता है, कर्ट-कचहरी में हार होती है और सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ता है।

पहचान:

- जातक के घर के जमीन के नीचे अग्निकुंड बना हो या उस घर में सूर्य की रोशनी छत में से आ रही हो तो जातक स्व ऋण से पीड़ित होता है ।

नोट: लालकिताब में ऋण से संबंधित योग केवल जन्म कुंडली में लागु होते हैं वर्षफल या अन्य कुंडली में इसका विचार नहीं होता।

अनिष्ट फल:

- अकस्मात ही इश्वर की विनाश लीला शुरू होती है और दौलत शोहरत चुटकियों में खाक हो जाती है ।
- पशुओं का खोना व मरना स्वाभाविक हो जाता है ।
- जातक का शरीर निर्बल हो जाता है ।
- मुंह में हमेशा गीलापन-सा महसूस होता है ।
- यह घटना तब शुरू होती है, जब जातक के पुत्र की उम्र 12 साल के अन्दर होती है ।

उपाय:

- सभी कुटुंबिजन व रिश्तेदारों से समान मात्रा में धन इकट्ठा करके सूर्यदेव की प्रशन्नता हेतु हवन करें।
- प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करें।
- किसी कार्य को शुरू करने से पहले मुंह मीठा करें और दो-चार घूंट पानी पिये, फिर कार्य करें।

मातृ ऋण

संतान का जन्म होने के बाद मां को घर से बाहर कर देना तथा परिवार से उसे अलग कर देना या उसे कष्ट देना अर्थात दुखी करना या खुद मानसिक रूप से परेशान रहने पर माता को कष्ट देना इत्यादि से मातृ ऋण होता हैं।

ग्रह संकेत:

लाल किताब के अनुशार चतुर्थ स्थान के केतु तो चन्द्रमा पीड़ित होता हैं जिससे मातृऋण माना हैं।

पहचान:

घर के निकट स्थित नदी या कुएं के पानी का उपयोग गंदगी साफ करने में या उसमें मल-मूत्र इत्यादि करना या उसमें गंदगी डालना मात ऋण को दर्शाता हैं।

अनिष्ट फल:

- जातक के कार्यो में बाधाएं आति हैं उसे रोजगार की चिंता सताति रहती हैं।
- अचानक सम्पत्ति नष्ट हो जाती हैं, घर में पशुओं की मृत्यु, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, घर में अचानक मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट देने वाला समय प्रतित होता हैं।
- इस ऋण से ग्रस्त जातक को धन हानि होती है, रोग लग जाता है, कई लोगो से ऋण लेना पड़ता है।
- प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती है। जातक की विचारशक्ति और सहनशक्ति अर्थात आत्मविश्वास में कमी हो जाती हैं।
- एसे जातक को यदि कोई व्यक्ति सहायता करना चाहता है तो उसे भी कष्ट-संकट व अनिष्ट फल प्राप्त होते है।
- घर का नल, तालाब या कुएं का पानी सूख जाता हैं अर्थात घर में जल का संकट होने लगता हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में चांदी लेकर बहते पानी में बहानी चाहिए।
- बडे-बुजुर्गो का आशीर्वाद ले तो मातृ ऋण से शीघ्र मुक्ति मिलेगी ।

स्त्री ऋण

प्रसूति के समय स्त्री को किसी लालच वश आकर मार डालना मरवा डालने से स्त्री ऋण होता हैं।

ग्रह संकेत:

जन्म कुंडली में द्वितीय या सप्तम भाव में सूर्य, चन्द्र या राहु हो तो शुक्र पीडित होता हैं जो स्त्री ऋण होने का संकेत देता है।

पहचान:

- शुक्र पीडित होने पर जातक और उसके परिवार के लोगो को अनेक दु:ख मिलते हैं और उसके शुभ कार्यों में विघ्न आता है।
- जातक की खुशी के रंग में भंग पडता हैं जैसे परिवार में खुशी के अवसर पर अचानक अशुभ समाचार प्राप्त हो, जैसे किसी की मृत्यु हो जाना किसी को लकवा होना या कोई निकट संबंधि भयंकर रोग से पीडित हो जाए।
- जातक का अंगूठा बिना किसी कारण निष्क्रिय या बेजान हो जाये, स्वप्नदोष, त्वचा के रोग से ग्रस्त तो यह स्त्रीऋण होने का संकेत होते हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में धन लेकर गायों को भोजन कराना चाहिए।
- साफ-सुथरे वस्त्र सलीके से धारण करने पर भी शुक्र के अनिष्ट से बचाता हैं।

बहन-बेटी का ऋण

किसी की लड़की या बहन पर अत्याचार किए हों या उसकी हत्या की हों। दूसरों के मासूम बच्चों को बेच देना या उनकी हत्या की हो तो बहन-बेटी का ऋण पैदा होता हैं।

ग्रह संकेत:

यदि जातक के में तृतीय या छठे भाव में चन्द्रमा हो तो बुध पीड़ित होता है । बुध पीड़ित होने से बहन-बेटी का ऋण होता हैं।

पहचान

- जातक के घर में बहन-बेटी के विवाह के अवसर पर या जन्म के समय अचानक दुर्भाग्यपूर्ण अशुभ घटनाएं घटती है।
- जातक पूरी तरह से बरबाद हो जाता हैं।
- धनवान होते हुए भी कंगाल जैसा बन जाता हैं।
- संघर्ष बना रहता है और सगे-संबंधियों से सहायता नहीं मिलती।
- कभी कभी जातक को पुत्र संतान के जन्म के समय भी दुर्भाग्य से संमुख्खीन होना पडता हैं।
- जातक का स्वास्थ्य दुर्बल होने लगता हैं उसके दांत बेकार हो जाते हैं।
- सूंघने की शक्ति समाप्त हो जाती हैं। दांपत्य जीवन में कामशक्ति का अभाव होने लगता हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में पीले रंग की कोड़ियां लेकर उसे जलाकर उनकी राख को बहते पानी में प्रवाहित करना चाहिए।
- दांत साफ रखे। नाक अवश्य छिदवायें इससे बुध का बुरा प्रभाव कम हो जाता हैं।

संबंधियों (रिश्तेदारी) का ऋण

किसी मित्र या संबंधि को जहर दे देना, किसी की तैयार फसल को आग लगवा देना या किसी का मकान आग लगा देना। किसी की भैंस को मारने या मरवाने से संबंधि का ऋण होता हैं।

ग्रह संकेत:

यदि जातक के जन्म कुंडली में प्रथम व अष्टम भाव में बुध या केतु हो तो मंगल पीडित होता हैं और मंगल पीडित होने से संबंधि ऋण का लगता हैं।

पहचान:

- जातक रिश्तेदार एवं संबंधियों से संपर्क अच्छे नहीं रहते जातक उनसे नफरत करता हैं।
- अपने बच्चों का जन्मदिन नहीं मनाता या अन्य पर्व त्यौहारों के अवसर में खुशीयां नहीं मनाता।

अनिष्ट फल:

- जातक के बालिग होते ही समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति होने लगती हैं।
- जातक जिस कार्य में हाथ डालता है, अपने आप ही सिद्ध होने लगते हैं।
- जातक को अपार धन संपत्ति का सुख प्राप्त होता हैं।
- जातक से यदि कोई शत्रुता करता हैं तो वह स्वत: ही बरबाद हो जाता है।
- जातक को प्रायः सभी क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने लगती हैं और अचानक भाग्य पलट जाता हैं।
- जातक पर विभिन्न मुसीबते आने लगती हैं।
- जातक ने अर्जित की हुई सब धन-संपत्तियां स्वाहा हो जाती हैं।
- समर्थ होते हुवे संतान उत्पन्न नहीं हो पाती। यदि संतान होती हैं तो अधिक दिन तक जीवीत नहीं रहती या अपंग हो जाती हैं।
- जातक का शरीर बलहीन होने लगता हैं।
- एक आंख में कमजोरी हो जाती हैं या खराबी आजाती हैं।
- जातक स्वभाव से क्रोधी चिड़चिड़ा हो जाता है।
- अनावश्य लोगो से लडाई झगडे करने पर उतारु हो जाता हैं यह सब रिश्तेदारी ऋण के कारण होता हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में पैसा इकट्ठ करके गरीबों के लिये दवाइयां खरीद कर धर्म कार्य हेतु किसी वैद्य, हकीम या डोक्टर या औषधालय में मुफ्तदे।
- तांबे का सिक्का नदी में प्रवाहित करे ।

निर्दयी ऋण:

जीव हत्या करना या किसी का मकान धोखे से ले लेना या उसका मूल्य न चुकाना या हत्या कर उसकी सम्पत्ति छीन लेने पर निर्दयी ऋण पैदा होता हैं।

ग्रह संकेत:

यदि जातक में दशम या एकादश भावों में सूर्य,चन्द्रमा व मंगल हों, तो वह शनि से पीड़ित होता है और शनि पीड़ित होने से निर्दयीऋण बनता हैं।

पहचान:

- शनि के पीड़ित होने से जातक का नाश होता हैं।
- परिवार में विपत्तियों पीछा नहीं छोडती।
- घर में अग्निकांड होता हैं या घर का ढह जाता हैं।
- परिवार के सदस्यों का आकस्मिक दुर्घटना के कारण अपंग हो जाते हैं या परिवार के सदस्यों की मृत्यु होती हैं।
- जातक के सिर के बालों का झड़ जाते हैं कभी-कभी पलको और भोहों के बाल भी झड जाते हैं।
- चोरी आदि अनिष्ट स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में एक ही दिन 100 मजदूरों को उत्तम भोजन करायें।
- मछली पकड़कर को आटे की गोलियां खिलायें।

अजन्मा ऋण

जातक का जिन कोगों से वास्ता पडता हैं उनके साथ में धोखाधडी करके उनके वंश को मिडाने से **अजन्में** का . ऋण लगता हैं।

ग्रह संकेत:

जिस जातक की जन्म कुंडली में द्वादश भाव मे सूर्य,चन्द्रमा या मंगल स्थित हो तो राहु पीड़ित हो जाता है। राहु पीडित होने पर जातक के उपर अनजान या अजन्मे का ऋण लगता हैं।

पहचान:

- जातक के घर के दक्षिणी हिस्से की तरफ वीरान शमशान भूमि या कब्रिस्तान या भडभूजे की भट्टी होती हैं।
- घर के मुख्य दरवाजे के बाहर गंदेपानी की नाली बह रही होगी।

अनिष्ट फल:

- राहु के प्रभाव से जातक पर अचानक अनिष्ट फल प्राप्त होते हैं।
- जातक का भाग्य दुर्भाग्य में बदल जाता हैं।
- न्याय के स्थान पर अन्याय प्राप्त होता हैं।
- चोरी, डाका, हत्या, आगजनी, बलात्कार जैसे झुठे आरोप लगते हैं।
- निर्दोष होकर भी जेल जान पडता हैं।
- काले जानवर मर जाते हैं, नाखून झड ने लगते हैं।
- मानसिक व शारीरिक क्षमता कमजोर हो जाती हैं।
- शत्रु उभरने लगते हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में एक-एक श्रीफल (नारियल) इकट्ठा कर पानी में प्रवाहित करें।
- परिवार के साथ रहें। शिखा अवश्य रखें। ससुराल के लोगों से संबंध मधुर रखे।

दैवी ऋण

जातक ने बुरी नियत से या छल से दूसरे की संतान का नाश कर दिया हो या कुत्ते को मार दिया हो अथवा लालच के कारण किसी का धन हड़प लिया हो तो दैवी ऋण पैदा होता हैं।

ग्रह संकेत:

छठे भाव में चन्द्र या मंगल हो तो केतु पीड़ित होता हैं और केतु पीड़ित होने से दैवी ऋण होता हैं।

पहचान:

- दूसरेकी औलादको खत्मकरदेना कुत्तों को मार देना।
- रिश्तेदारों से बुरी नीयत रखना और उसके वंशजों को समाप्त कर देना।

अनिष्ट फल:

- केतु पीडित होने से पुत्र का नाश होता हैं। पुत्र होती ही नहीं यदि हुई भी तो वह मर जाती हैं और यदि जीवित रही तो वह अपाहिज,गूंगी-बहरी होती हैं।
- जातक का परिवार नष्ट होता है, धन हानि होती है और बंदु-बांधव विश्वासघात करते मिलते हैं।

उपाय:

- अपने परिवार या कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से समान हिस्से में धन लेकर कुत्तों को भोजन कराना चाहिए।
- किसी विधवा की मदद करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

स्वस्तिक सकारात्मक ऊर्जा का स्त्रोत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

स्वस्तिक संस्कृत भाषा का शब्द है।

स्वस्तिक का सरल शब्दों में अर्थ शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला है। स्वस्तिक शब्द मूल रुप से सु + अस से बना है।

सु का शाब्दिक अर्थ है शुभ, अच्छा, कल्याणकारी, मंगलकारी। अस का शाब्दिक अर्थ है अस्तित्व, सत्ता।

दोनो शब्दों के संयोज से बना हैं, स्वस्तिक अर्थात शुभ, कल्याणकारी या मंगलकारी की सत्ता एवं उसका प्रतिकात्मक रुप।

स्वस्तिक व्यावहारिक रुप से हमारी पूर्णतः कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। धर्मशास्त्रों में स्वस्तिक को देवी-देवता की शक्ति के प्रतीक रुप में शुभ एवं कल्याणकारी माना गया है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में स्वस्तिक का वर्णन आशीर्वाद युक्त, मंगलकारी या पुण्यकारी के रुप में किया गया लिखा है, स्वस्तिक के प्रतिक चिन्हे में सभी दिशाओं में सकल लोक का कल्याण अर्थात सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना समाहित हैं।

मंगलकारी प्रतीक स्वस्तिक हिन्दू धर्म के अत्यंत पवित्र एवं शुभ धार्मिक प्रतीक चिन्हों में से एक है। अभी तक प्राप्त प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से विभिन्न प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं, पुरातन काल से ही हिन्दू संस्कृति के अलावा अन्य अनेक संस्कृति में भी स्वस्तिक अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा हैं।स्वस्तिक का चिन्ह अपने आप में विलक्षण है, जो सृष्टि के अनेक गृढ रहस्यों से युक्त है।

विद्वानों का मत हैं की पौराणिक काल में हिन्दू संस्कृति में किसी भी शुभ कार्य या मंगल कार्य को आरंभ करने से पूर्व मंगलाचरण लिखने की परंपरा प्रचलित थी। लेकिन कालांतर में विद्वान ऋषि-मुनियों ने अनुभव किया की हर व्यक्ति के लिए किसी शुभ कार्य अथवा मांगलिक कार्य के आरंभ में विधि-विधान से मंगलाचरण लिखना सम्भव नहीं हैं, तब गहन चिंतन-अध्ययन से संभवत् शुभकार्यों का शुभारंभ सरलता से करने के उद्देश्य से स्वस्तिक चिन्ह का आविष्कार किया होगा! पौराणिक धर्मग्रंथों के अनुसार हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हज़ारों वर्ष पूर्व ही स्वस्तिक की आकृति को निर्मित कर, उसमें छुपे गृढ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था।

मुख्यतः स्वस्तिक का निर्माण छह रेखाओं से होता है। स्वस्तिक बनाने के लिए धन (+) चिन्ह अर्थात दो सीधी रेखाएँ रेखाएं जो एक दूसरी को काटती हैं, उसकी चारों भुजाओं के कोने से समकोण बनाने वाली एक रेखा दाहिनी (दक्षिणवर्त्ती) ओर खींचने से स्वस्तिक बनता है। दक्षिणवर्त्ती में रेखाएँ हमारे दायीं ओर मुड़ती (दक्षिणवर्त्ती / घडी की सूई चलने की दिशा) हो, उसे दक्षिणावर्त स्वस्तिक कहते हैं। वामावर्त्ती में रेखाएँ पीछे की ओर मुड़ती हुई हमारी बायीं ओर (वामावर्त्ती/घडी की सूई चलने की दिशा से उलटी) हो, उसे वामावर्त स्वस्तिक कहते हैं। दक्षिणवर्त्ती एव वामावर्त्ती स्वस्तिक स्त्री एवं पुरुष के प्रतीक के रूप में माना जाता हैं।

हिन्दू संस्कृति में स्वस्तिक प्रबल रुप से दक्षिणवर्त्ती ही प्रयुक्त रहा हैं। क्योंकि, दायीं ओर मुडी भुजा वाला स्वस्तिक शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक हैं, लेकिन कुछ अपवाद अथवा विशेष परीस्थिति या विशेष संस्कृति या परंपराओं में वामावर्त्ती अर्थात उल्टा स्वस्तिक भी प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन, जानकारों का मत हैं की उल्टा स्वस्तिक (वामावर्त्ती) विशेष शुभकारी
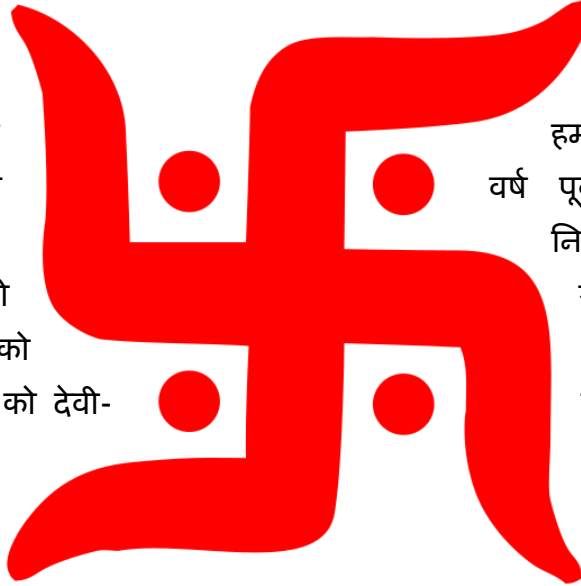
नहीं होता, अपितु यह अमांगलिक, हानिकारक हो सकता हैं। अतः एसे स्वस्तिक का चित्रांकन केवल विशेष परिस्थियों में अल्प समय के लिए हि करना चाहिए हैं।^

^(नोट: हालाकिं इसमें अनेक मत-मतांतर रहें हैं, क्योकिं कुछ संप्रदाय या संस्कृतिमें उल्टा स्वस्तिक (वामावर्ती) भी शुभकारी माना जाता रहा है। इसी लिए विभिन्न संस्कृतियों में सकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोत एवं मंगल चिन्हों के रुप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है।)

हिन्दू धर्मग्रंथों में भगवान शिव-शक्ति के रुप में ज्योतिर्लिंग को विश्व की उत्पत्ति का मूल माना है। इस विषय पर विद्वानों का गहन अध्ययन एवं चिंतन रहा हैं की जिस प्रकार दाहिना स्वस्तिक नर का प्रतीक है और बायाँ नारी का प्रतीक हैं। उसी प्रकार स्वस्तिक की खडी रेखा सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक है और आडी रेखा सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है। स्वस्तिक के मध्य बिंदु को भगवान विष्णु का नाभि कमल भी माना जाता है, जहाँ से विश्व की उत्पत्ति मानी गई है। स्वस्तिक में प्रयुक्त होने वाले 4 बिन्दुओ को 4 दिशाओं का प्रतीक माना गया है। कुछ विद्वान इसे 4 वर्णों की एकता का प्रतीक मानते हैं, तो कुछ विद्वान इसे ब्रह्माण्ड का प्रतीक मानते हैं। क्योकि, स्वस्तिक के चारों सिरों पर खींची गयी रेखाएं किसी बिंदु को इसलिए स्पर्श नहीं करतीं, क्योंकि इन्हें ब्रहाण्ड के प्रतीक स्वरूप अन्तहीन दर्शाया गया है।

वेदों में स्वस्तिक के महत्व का उल्लेख विभिन्न अर्थों मिलता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक चिन्ह को गणेश, विष्णु, सूर्य, सृष्टिचक्र तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना गया है। इसकी आकृति में चार बिंदु इको गौरी, पृथ्वी, (कूर्म) कछुआ और अनन्त देवताओं का वास माना जाता है। कुछ विद्वानों ने स्वस्तिक को भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र का स्वरुप माना है। जिसमें मनुष्य की शक्ति, प्रगति, प्रेरणा का उद्देश्य निहित है।

ऋग्वेद के अनुसार स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक है, और स्वस्तिक की चार भुजाएं चार दिशाओं को दर्शाती है। सूर्य समस्त इश्वरीय शक्तियों का केंद्र बिंदु है, जो सकल लोक में जीवन दाता माना गया है। स्वस्तिक को सूर्य का स्वरुप मान कर प्रयुक्त करने पर निरंतर शक्ति प्राप्त होती हैं। स्वस्तिक को ऋग्वेद में सूर्य मनोवांछित फलदाता सम्पूर्ण जगत का कल्याण करने वाला और देवताओं को अमरत्व प्रदान करने वाला माना गया है। वायवीय संहिता में स्वस्तिक को ब्रह्मा का ही एक स्वरूप माना है, जो आठ यौगिक आसनों में एक है।

कुछ विद्वान स्वस्तिक की चार भुजाओं को हिन्दू धर्मग्रंथों मे वर्णित चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) का प्रतिक, चार युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग) का प्रतिक, चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्न्यास) का प्रतिक, चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का प्रतिक, चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) की एकता का प्रतीक मानते हैं। इन भुजाओं को ब्रह्मा के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप भी माना जाता है।

जिस प्रकार सभी मांगलिक और शुभ कार्यो में सर्वप्रथम श्री गणेश का पूजन किया जाता है। उसी प्रकार सभी मांगलिक कार्य, शुभ कार्यो इत्यादि में स्वतिस्क के चिन्ह का निर्माण किया जाता है। किसी भी शुभ कार्य-क्रम, व्रत, पर्व, त्योहार, पूजा-अर्चना में घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि की दिवारों पर, पूजन की थाली, बाजोट इत्यादि पर हल्दी, कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं। इस के पीछे का मुख्य उदेश्य हमारे आसपास से नकारात्मक ऊर्जा दूर करना होता है, क्योकि स्वस्तिक को सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करने के पीछे अन्य उद्देश्य होता हैं, जिससे अपने आराध्य से यह प्राथना कि जाती हैं, कि हमारे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो। हमारे घर में सुख-शांति-समृद्धि बनी रहे।

स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना वास्तु के अनुसार भी लाभदायक सिद्ध होता है इसलिए घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि के प्रवेश द्वार के उपर या दोनों ओर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं, मान्यता हैं कि इससे बुरी नज़र से रक्षा होती हैं और और घर के वातावरण से नकारात्मक उर्जा दूर होती और निरंतर सकारात्मक उर्जा का संचार होता है।

कैश बॉक्स, तिज़ोरी, अलमारी इत्यादि धन रखने के स्थान पर भी स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना अत्यंत शुभ होता हैं, मान्यता हैं की इससे धन की सुरक्षा और वृद्धि होती हैं, और अशुभ शक्ति से रक्षण होता है।

स्वस्तिक को धनकी देवी लक्ष्मी और बुद्धि के देवता गणेश जी का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक के चिन्ह को चारों दिशाओं के अधिपति देवता क्रमशः अग्नि, इन्द्र, वरुण और सोम के पूजन हेतु एवं अन्य देवी-देवता के आशीर्वाद को प्राप्त करने हेतु प्रयोग किया जाता है। स्वस्तिक का चिन्ह केवल शुभ स्थानों पर ही करना चाहिए, शौचालय जैसे अशुभ स्थान पर बनाने या लगाने से बचना चाहिए, अन्यथा प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

अन्य संस्कृति में स्वस्तिक

- स्वस्तिक को ग्रीक में पूर्वकाल में गम्माडिओन (gammadion) गम्माडिओन (tetragammadion) के नाम से जाना जाता था।
- स्वस्तिक को जर्मन में हकेन्क्रुज़ या हकेनक्रेउज़ या हुकड क्रॉस (Hakenkreuz), क्रुमक्रेज़ या क्रुक्ड क्रॉस(Krummkreuz) के नाम से जाना जाता है।
- पुरातन समय से मुख्य रूप से फाईलफॉट (fylfot) में हेराल्ड्री (Heraldry) अर्थात कलात्मक रचनाएं, प्रदर्शन, रक्षक ढाल या हथियार झंडे और प्रतीकात्मकता संबंधित विषयों का अध्ययन करने की विद्या में और वास्तुकला में प्रयुक्त किया जाता था।
- मूल अमेरिकी लोगों के ऐतिहासिक संदर्भ की आयोनोग्राफी में इसे घुमावदार लॉग (Whirling Log) के रुप में पाया गया है, जिसे समृद्धि, उपचार और भाग्य की अधिकता को दर्शाया गया था।
- चीन में स्वस्तिक को एक वान(wàn) के नाम से एक विशेष संकेत के रुप में अपनाया गया है। चीन में स्वास्तिका जैसे प्रतीकों का उल्लेख नियोलिथिक स्क्रिप्ट (Neolithic scripts) में पुरातन काल के धर्म ग्रंथों में वर्णित रहा है। पुरातन काल से ही चीन की लेखन प्रणाली में 卍 और 卐) के बाएं और दाएं हाथ वाले स्वस्तिक का चिन्ह प्रचलित रहा है। चीन, जापान और कोरिया में स्वास्तिका को आमतौर पर पूर्ण सृजन का प्रतिक दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है, चीन में तांग राजवंश (Tang dynasty) के दौरान, महारानी वू ज़ेटियन (Wu Zetian) ने आदेश जारी किया था कि स्वास्तिका को सूर्य के वैकल्पिक प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया जाएगा।
- जापानी में स्वस्तिक के प्रतीक को मांजी (Manji) कहा जाता है।
- रेने गुएनॉन (Rene Guenon) के अनुसार, स्वास्तिक पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके आसपास की हर चिज घुमनेवाली अर्थात गतिमान हैं लेकिन वह एक केंद्र अर्थात अचल धुरी पर स्थिर होता हैं। जैसा कि यह जीवन का प्रतीक है। ब्रह्मांड के सिद्धांत में यह पूर्ण भगवान के रुप को सजीव करने वाला सर्वोच्च सिद्धांत हैं। स्वस्तिक यह विश्व के निर्माण में ब्रह्मांड के सिद्धांत की गतिविधि का प्रतिनिधित्व करता है। रेने गुएनॉन के अनुसार, स्वास्तिका अपने बुनियादी मूल्य में चीनी परंपरा के यिन और यांग प्रतीक का प्रतिक है।

जैन धर्म में स्वस्तिक

- हिन्दू धर्म की तरह ही जैन धर्म में भी स्वस्तिक को अत्यंत मांगलिक प्रतीक माना जाता हैं। क्योकि, स्वस्तिक में मंगलकामना का भाव समाहित होता हैं। विद्वानों का मत हैं की स्वस्तिक की उत्पत्ति ऋग्वेद से भी प्राचीन हैं।
- जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकरों के मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक विशेष चिह्न है। चौबीस तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर भगवान् श्री सुपार्श्वनाथजी का मांगलिक चिह्न स्वस्तिक है।

जैन धर्म के 8 मांगलिक मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक मांगलिक चिन्ह माना गया हैं।

- ❖ जैन धर्म में सभी प्रकार के पूजन-अर्चन आदि में स्वस्तिक का प्रयोग को विशेश रुप से किया जाता हैं।
- ❖ जैन धर्म में किसी भी मांगलिक कार्य के शुभारंभ में हलदी, केसर, चंदन, चावल इत्यादि से स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर भगवान से अपने मंगल एवं कल्याण की कामना की जाती है।
- ❖ प्रायः सभी जैन पवित्र पुस्तकों और मंदिरों में प्रमुख व्रत-पर्व-त्यौहरों में आमतौर पर वेदी/ चौकी पर चावल से स्वास्तिका चिन्ह बनाने के साथ प्रारंभ होता है।
- ❖ जैन धर्म में 24 तीर्थंकर के सम्मुख चावल से स्वास्तिका बना के उस पर बादाम, फल, एक मीठे बतासे(पतासा) इत्यादि या सिक्के/नोट इत्यादि रख कर अर्पण किया जाता है।
- ❖ जैन धर्म में स्वास्तिक की चार भुजाएं चार स्थानों का प्रतीक मानी हैं, जो आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से पुनर्जन्म ले सकती है, उस आत्मा के मोक्ष प्राप्ति के पहले जन्म और मृत्यु के चक्र को समाप्त कर उससे सर्वज्ञता प्राप्त की जा सकती हैं।

बौद्ध धर्म में स्वस्तिक

- ❖ बौद्ध धर्म में भी स्वस्तिक चिह्न अत्याधिक शुभ माना जाता है। भगवान् बुद्ध के मांगलिक चिन्ह में स्वस्तिक का विशेष महत्त्व है। बौद्ध स्तूपों-विहारों इत्यादि धार्मिक स्थलों पर स्वस्तिक का चिन्ह विशेष रुप से मिलता है।
- ❖ बौद्ध धर्म में, स्वास्तिका को बुद्ध के शुभ पैरों के निशान का प्रतीक माना जाता है। स्वास्तिक का आकार बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांत में वर्णित शाश्वत चक्र का प्रतीक है। स्वास्तिक का प्रतीक बौद्ध धर्म में हिंदू धर्म के समान ही तंत्र की गूढ परंपराओं में विशेष रुप से पाया जाता है, जहां यह चक्र के सिद्धांतों और अन्य ध्यान सहायक उपकरण के साथ पाया जाता है।

इनके अलावा अन्य देशों की संस्कृति में स्वस्तिक को विशेष रुप से शुभ एवं पवित्र माना गया हैं।

स्वस्तिक के विभिन्न लाभ

आज आधुनिक युग में नई खोज-अनुसंधान व अनुभवों के आधार पर विद्वानों का अनुभव हैं, कि उचित परामर्श से विभिन्न पदर्थ से स्वस्तिक का निर्माण करने पर सरलता से विभिन्न लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं। स्वस्तिक के उचित प्रयोग से आप भी धनवृद्धि, सुख-शान्ति, उच्च पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, कार्य में सफलता, स्वास्थ्य लाभ, वास्तुदोष निवारण, गृहक्लेश निवारण, शत्रु भय से रक्षण कर सकते है।

- ❖ व्यवसायिक प्रतिष्ठान की उत्तर दिशा में हल्दी से स्वस्तिक अंकित कर उसका पूजन विशेष लाभकारी सिद्ध होता है।
- ❖ हल्दी से अंकित किया गया स्वस्तिक शत्रु शमन करता है।
- ❖ आम की लकड़ी का स्वस्तिक घर के प्रवेश द्वार पर लगाने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है,
- ❖ जिस कोने में वास्तुदोष हो उस कोने में आम की लकड़ी का स्वस्तिक लगाने से वास्तुदोष मे कमी होती है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में स्वास्तिक बनाने से घर में खुशहाली का आगमन होता है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में या किसी मंदिर में स्वास्तिक बनाकर उस पर पांच तरह के अनाज रख के शुद्ध घी का दिपक जलाने से वांछित मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में स्वास्तिक बनाकर उस पर इष्टदेव की मूर्ति स्थापित किया जाए तो मनोवांछित इच्छाएं शीघ्र पूर्ण होती है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में तर्जनी अंगुली (Index Finger) से कुमकुम या सिंदूर से स्वास्तिक बनाकर पूजन करने से अनिद्रा दूर होती है, एवं दुःस्वप्न (बुरे सपने) आने बंद हो जाते हैं।

- विद्वानों के अनुसार चातुर्मास में मंदिर में अष्टदल कमल व स्वस्तिक बनाकर बना कर विधि-वत पूजन करने से स्त्री को अखंड सुहागन रहती है।
- पंच धातु से बने स्वस्तिक को प्रवेश द्वार पर लगा कर उसका पूजन करने से विभिन्न प्रकार के संकटो से रक्षा होती हैं।
- धन लाभ हेतु घर के पूजन स्थान में चांदी का नवरत्न जड़ीत स्वस्तिक स्थपित करना विशेष लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निरंतर धन लाभ हेतु चौखट की एक ओर कुमकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर चावल की ढेरी बनाकर उस पर एक सुपारी रख कलावा बांधकर नियमित पूजन करना लाभप्रद होता।
- धन लाभ के लिये स्वस्तिक से एक विशेष उपाय और किया जाता है। इस में दहलीज के दोनों ओर स्वस्तिक बनाकर उसकी पूजा करें। स्वस्तिक पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी पर कलवा बांधकर उसे ढेरी पर रखें इस उपाय से भी धन में लाभ मिलता है।

***

धार्मिक कार्यों में माला चयन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

साधाना मे मंत्र जप के लिये माला का विशेष महत्व होता है। विभिन्न प्रकार के कार्य की सिद्धि हेतु माला का चयन अपने कार्य उद्देश्य के अनुशार करने से साधक को अपने कार्य की सिद्धि जल्द प्राप्त होती हैं, क्योकी माला का चयन जिस इष्ट की साधना करनी हो, उस देवता से संबंधित पदार्थ से निर्मित माला का प्रयोग अत्याधिक प्रभाव शाली माना गया हैं।

देवी- देवता कि विषेश कृपा प्राप्ति के लिए उपयुक्त माला का चयन करना चाहिए-

लाल चंदन- (रक्त चंदन माला) गणेश, पुष्टि कर्म, दूर्गा, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

श्वेत चंदन- (सफेद चंदन माला) - लक्ष्मी एवं शुक्र ग्रह कि प्रसन्नता हेतु।

तुलसी- विष्णु, राम व कृष्ण कि पूजा अर्चना हेत॥

मूंग- लक्ष्मी, गणेश, हनुमान, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

मोती- लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

कमल गटटा- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

हल्दी - बगलामुखी एवं बृहस्पति (गुरु) कि प्रसन्नता हेतु।

काली हल्दी- दुर्भाग्य नाश, मां काली कि प्रसन्नता हेतु।

स्फटिक - लक्ष्मी, सरस्वती, भैरवी की आराधना के लिए श्रेष्ठ होती है।

चाँदी - लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

रुद्राक्ष - शिव, हनुमान कि प्रसन्नता हेतु।

नवरत्न - नवग्रहो कि शांति हेतु।

सुवर्ण- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

अकीक - (हकीक) कि माला का प्रयोग उसके रंगो के अनुरुप किया जाता हैं।

रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला सभी देवी- देता की पूजा उपासना में प्रयोग कियाजा सकता हैं।

विद्वानो ने मतानुशार रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती हैं। रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जाप करने से नवग्रहों के प्रभाव भी स्वतः शांत होने लगते हैं और मनुष्य के अनंत कोटी पातको का शमन होता हैं।

ग्रह शान्ति हेतु माला चयन:

1) सूर्य के लिए माणिक्य की माला, गारनेट, माला रुद्राक्ष, बिल्व की लकड़ी से बनी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
2) चन्द्र के लिए मोती, शंख, सीप की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
3) मंगल के लिए मूंगे या लाल चंदन की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
4) बुध के लिए पन्ना या कुशामूल की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
5) बृहस्पति के लिए हल्दी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
6) शुक्र के लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
7) शनि के लिए काले हकीक या वैजयन्ती की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
8) राहु के लिए गोमेद या चन्द की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
9) केतु के लिए हसुनिया या लाजवर्त की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

मंत्र सिद्ध

वास्तु कलश

- ❖ वास्तु कलश एक दिव्य प्रतीक माना जाता है।
- ❖ वास्तु कलश का प्रयोग वास्तु दोष निवारण के लिए किया जाता है, यह सभी प्रकार के वास्तु दोषों को दूर करता है।
- ❖ यह विशेष रूप से घर, व्यवसायीक प्रतिष्ठान और उद्योग में वास्तु शांति के लिए प्रयोग किया जाता है।
- ❖ यदि आप जिस घर में रहते हैं, वह आपके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है, बीमार स्वास्थ्य, निर्धनता या आपको व्यवसाय में नुकसान होता हैं, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कोई वास्तु दोष होता है।
- ❖ इस समस्या से छुटकारा पाने का बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है अपने फ्लैट, घर, अपार्टमेंट, दुकान, कार्यालय और उद्योग में वास्तु कलश को स्थापित करना।
- ❖ मंत्र सिद्ध वास्तु कलश का प्रयोग घर या किसी भी प्रकार की भूमि / संपत्ति के सभी वास्तु दोषों के निवारण के लिए किया जाता है।
- ❖ यदि भूमि में कुछ दोष हो, यदि दिशाएँ दोषपूर्ण हो, ईशान जैसे कुछ कोण उनके सही स्थान पर न हो, अव्यवस्थित हो और कुछ अतिरिक्त बड़े हो, वास्तु की दृष्टि से ये सब दोष का कारण हो सकते है।
- ❖ अधिक तोड़-फोड़ के बिना इन दोषों को दूर करने के लिए, यह "मंत्र सिद्ध वास्तु कलश" सर्वश्रेष्ठ समाधान है
- ❖ कुल मिलाकर समृद्धि बढ़ाने के लिए वास्तु कलश सर्वश्रेष्ठ है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वत: ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।
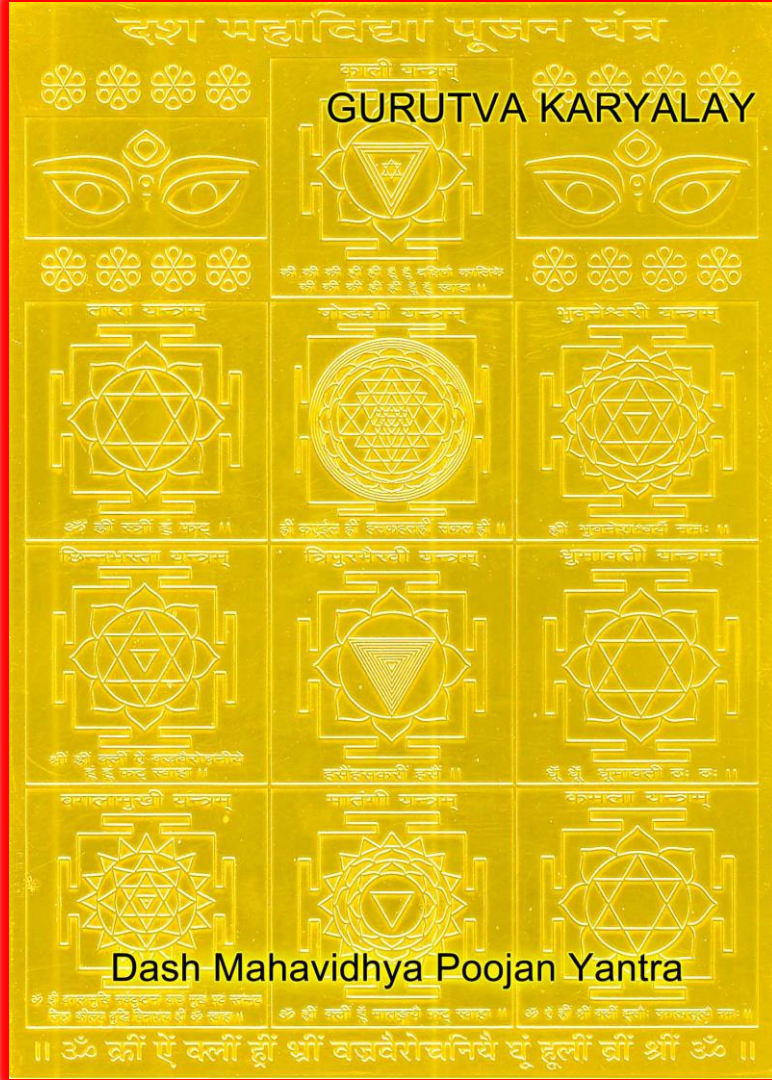
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढ़ैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online | Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुद्दष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	550	1” X 1”	370	1” X 1”	325
2” X 2”	910	2” X 2”	640	2” X 2”	550
3” X 3”	1450	3” X 3”	1050	3” X 3”	910
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1225
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	2350
9” X 9”	9100	9” X 9”	4600	9” X 9”	4150
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्यः- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है । अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ……………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach …………………………..	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………………………….	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach …………………………….	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………………………………..	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………..	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach …………………………….	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach …………………………….	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ……………………………….	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ……………………………..	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ……………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach …………………………..	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……………	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ……………………………..	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ……………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ……………………………..	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ………………………	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ……………………………..	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………….	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ………………………………	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ……………………….	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach …………...	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………….	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach …………………………………….	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach …………………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach …………………...	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………….	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ………………………..	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ………………………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) …………….	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..……………….	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..………………...	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………...	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..………………...…...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..……………..	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..…………………………...	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………..	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..…………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..………………...…...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………...	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..…………………………….	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………..	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..……………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………...	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ……………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………..	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..……………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………..	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ………………………………..	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजवर्त)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

सितम्बर-2020

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

SEP-2020